श्रद्धावानों का सुरक्षा कवच

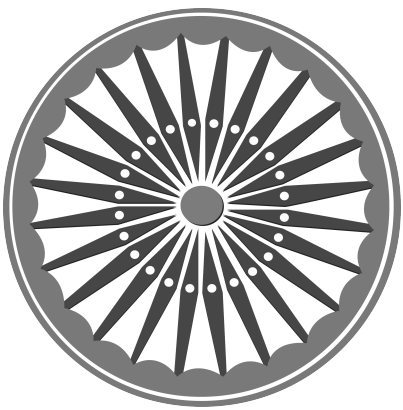

महापरित्राण सूत्रपाठ

“ सारे पापों को न करना, पुण्य का संचय करना
अपने मन को परिशुद्ध करना
यही है बुद्ध के उपदेश ”

– भगवान बुद्ध

परित्राण

- सरणागमन 07
- पञ्चसील 07
- आजीवट्ठमक सील 08
- अट्ठांग उपोसथ सील 08
- त्रिरत्न वंदना 09
- सप्तबुद्ध वंदना 10
- वज्रासन वंदना 10
- अर्हन्त वंदना 11
- बुद्ध भूमि वंदना 13
- धातु वंदना 14
- त्रिविध चेतिय वंदना 16
- बुद्ध पूजा (पालि) 16
- बुद्ध पूजा (हिन्दी) 17
- देवता आराधना 19
- पटिच्चसमुप्पाद समुदयो-निरोधो 19
- लोकावबोध सुत्तं 20
- महामंगल सुत्तं 22
- आलवक सुत्तं 24
- रतन सुत्तं 27
- करणीयमेत्त सुत्तं 29

- अंगुलिमाल परित्तं 30
- खन्ध परित्तं 31
- धजग्ग सुत्तं 32
- धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तं 35
- अनत्तलक्खण सुत्तं 42
- आटानाटिय सुत्तं 47
- इसिगिलि सुत्तं 61
- महाकस्सपत्थेर बोज्झंग 67
- महामोग्गल्लानत्थेर बोज्झंग 69
- महाचुन्दत्थेर बोज्झंग 71
- गिरिमानन्द सुत्तं 73
- मोर परित्तं 79
- चन्द परित्तं 80
- सुरिय परित्तं 81
- अट्ठविसती परित्तं 83
- आणत्ति परित्तं 84
- जय परित्तं 85
- जिनपञ्जर 87
- दसदिसा परित्तं 90
- आरक्षक परित्तं 91
- जलनन्दन परित्तं 92
- दसधम्म सुत्तं 93

- चतुरारक्खा 95
- महाजयमंगल गाथा 99
- मैत्री ध्यान (पालि) 101
- पुण्यानुमोदन 102
- त्रिरत्न से क्षमा मांगने का तरीका 105
- भंते जी को वंदना करने की विधि 106
- महासतिपट्ठान सुत्तं 107
    - कायानुपस्सना 107
    - वेदनानुपस्सना 118
    - चित्तानुपस्सना 119
    - धम्मानुपस्सना 121
- चार प्रत्यवेक्षणा 152
- जयमंगल गाथा 153
- छत्त माणवक गाथा 155
- नरसीह गाथा 156
- वन्दे..वन्दे..भगवन्तं.. 158

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स !

सरणागमन

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि

दुतियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि
दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि
दुतियम्पि संघं सरणं गच्छामि

ततियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि
ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि
ततियम्पि संघं सरणं गच्छामि

पञ्चसील

1. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामी।
2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामी।
3. कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामी।
4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामी।
5. सुरामेरय मज्झपमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामी।

आजीवट्ठमक सील

1. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
3. अब्रह्मचरिया वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
5. पिसुनावाचा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
6. फरूसावाचा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
7. सम्फप्पलापा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
8. मिच्छाजीवा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

अट्ठांग उपोसथ सील

1. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
3. अब्रह्मचरिया वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
5. सुरामेरय मज्जपमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
6. विकाल भोजना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

7. नच्च गीत वादित विसूक दस्सन माला गन्ध विलेपन धारण मण्डन विभूसनट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
8. उच्चासयन महासयना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

साधु ! साधु !! साधु !!!

त्रिरत्न वंदना

इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो
सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी
सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति।

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको
ओपनयिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति।

सुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो
उजुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो
ञायपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो
सामीचिपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो
यदिदं चत्तारि पुरसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला
एस भगवतो सावकसंघो
आहुणेय्यो पाहुणेय्यो दक्खिणेय्यो अंजलिकरणीयो
अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।

सप्तबुद्ध वंदना

विपस्सिस्स नमत्थु - चक्खुमन्तस्स सिरीमतो
सिखिस्सपि नमत्थु - सब्ब भूतानुकम्पिनो

वेस्सभुस्स नमत्थु - नहातकस्स तपस्सिनो
नमत्थु ककुसन्धस्स - मारसेनापमद्दिनो

कोणागमनस्स नमत्थु - ब्राह्मणस्स वुसीमतो
कस्सपस्स नमत्थु - विप्पमुत्तस्स सब्बधि

अंगीरसस्स नमत्थु - सक्यपुत्तस्स सिरीमतो
यो इमं धम्ममदेसेसी - सब्बदुक्खा पनूदनं

ये चापि निब्बुता लोके - यथाभूतं विपस्सिसुं
ते जना अपिसुना - महन्ता वीतसारदा

हितं देवमनुस्सानं - यं नमस्सन्ति गोतमं
विज्जाचरणसम्पन्नं - महन्तं वीतसारदं
विज्जाचरणसम्पन्नं - बुद्धं वन्दाम गोतमन्ति ॥

वज्रासन वंदना

वजिर संघात सरीरो - वजिर आणा नमाकरो
यो बुद्धो बोधि मूलम्हि - निसिन्नो वजिरासने

ससेन मारं जित्वान - सत पुञ्ञस्स तेजसा
पठमे पुब्बेनिवासं - मज्झिमे दिब्बचक्खुकं

पच्छिमे सब्ब संखारे - सम्मस्सं लक्खकोटियं
छत्तिंसाय कोटि - सतसहस्स मुखेन पच्चयं

ओतार महा वजिरेन - सुसम्बुद्धासवक्खयं
बुद्ध भूमि निट्ठंगो - सो महावजिरञाणसा
बोधनेय्यो सुबोधेत्वा - बोधेसितं नमामहं ॥

अरहन्त वंदना

सुखिनो वत अरहन्तो - तण्हा तेसं न विज्जति
अस्मिमानो समुच्छिन्नो - मोहजालं पदालितं

अनेजं ते अनुप्पत्ता - चित्तं तेसं अनाविलं
लोके अनुपलित्ता ते - ब्रह्मभूता अनासवा

पञ्चक्खन्धे परिञ्ञाय - सत्तसधम्मगोचरा
पासंसिया सप्पुरिसा - पुत्ता बुद्धस्स ओरसा

सत्तरतनसम्पन्ना - तीसु सिक्खासु सिक्खिता
अनुविचरन्ति महावीरा - पहीनभयभेरवा

दसहंगेहि सम्पन्ना - महानागा समाहिता
एते खो सेट्ठा लोकस्मिं - तण्हा तेसं न विज्जति

असेखञाणं उप्पन्नं - अन्तिमोयं समुस्सयो
यो सारो ब्रह्मचरियस्स - तस्मिं अपरपच्चया

विधासु न विकम्पन्ति - विप्पमुत्ता पुनब्भवा
दन्तभूमिं अनुप्पत्ता - ते लोके विजिताविनो

उद्धं तिरियं अपाचीनं - नन्दी तेसं न विज्जति
नदन्ति ते सीहनादं - बुद्धा लोके अनुत्तराति ।।

- **अरहन्त सारिपुत्त थेर वंदना :-**

यो धम्मसेनापती सुपूजितो - पञ्ञाय पारमिं गतो
गंभीरपञ्ञो मेधावी - मग्गामग्गस्स कोविदो
तं वीतरागं सुसमाहितिन्द्रियं - वन्दामि परिनिब्बुत सारिपुत्तं

- **अरहन्त महा मोग्गल्लान थेर वंदना :-**

यो महानुभावो छलभिञ्ञो - इद्धिया पारमिं गतो
सो विकुब्बनासु कुसलो - वसीभूतो महिद्धिया
तं वीतरागं सुसमाहितिन्द्रियं - वन्दामि परिनिब्बुत मोग्गल्लानं

- **अरहन्त महाकश्यप थेर वंदना :-**

यो दायादो बुद्धसेट्ठस्स - विसिट्ठो धुतगुणे मुनी
उपसन्तो उपरतो - पन्तसेनासनो विदू
तं वीतरागं सुसमाहितिन्द्रियं - वन्दामि परिनिब्बुत महाकस्सपं

- **अरहन्त आनन्द थेर वंदना :-**

यो चित्तकथी धम्मधरो - सतिमतो गतिधितीमतो
सुगतस्स कोसारक्खको - पूजनीयो बहुस्सुतो
तं वीतरागं सुसमाहितिन्द्रियं - वन्दामि परिनिब्बुतानन्दत्थेरं

- **अरहन्त अंगुलिमाल थेर वंदना :-**

यो च पुब्बे पमज्जित्वा - अंगुलिमालोति विस्सुतो
अप्पमादं समादाय - वीततण्हो सुसंवुतो
तं कारूणिकं सुसमाहितिन्द्रियं - वन्दामि परिनिब्बुतंगुलिमालं

बुद्ध भूमि वंदना

- **जात चेतिय (लुम्बिनी) वंदना :-**

मायासुतो सुगत साकिय सीहनाथो
जातक्खणे सपदसा महि चंकमित्वा
यस्मिं उदीरयि गिरीं वर लुम्बिणिम्हि
तं जातचेतियमहं सिरसा नमामि

- **सम्बोधि चेतिय (बोधगया) वंदना :-**

यस्मिं निसज्ज वजिरासन बन्धनेन
छेत्वा सवासन किलेस बलं मुनिन्दो
सम्बोधि ञाणमवगम्म विहासि सम्मा
तं बोधिचेतियमहं सिरसा नमामि

- **धम्म चेतिय (सारनाथ) वंदना :-**

संकम्पयं दस सहस्सिय लोकधातुं
देसेसि यत्र भगवा वर धम्मचक्कं
बाराणसी पुर समीप वने मिगानं
तं धम्मचेतियमहं सिरसा नमामि

- **निब्बान चेतिय (कुशीनगर) वंदना :-**

कत्वान लोकहितमत्तहितं च नाथो
आसीतिकोव उपवत्तन काननम्हि
यस्मिं निपज्ज भगवा निरुपाधिसेसं
निब्बान चेतियमहं सिरसा नमामि

धातु वंदना

समत्त बुद्धकिच्चो सो - कुसिनाराय निब्बुतो
धातुभेदमभेदंच - अधिट्ठाय महादयो

उण्हीसं चतुरोदाठा - अक्खकाद्वेच सत्तिमा
असम्भिन्नाच ता सब्बा - सेसा भिन्ना च धातुयो

भिन्नमुग्गप्पमाना च - भिन्नतण्डुलसन्निभा
महन्ता मज्झिमा चेव - खुद्दिका सासपूपमा

महन्ता सुवण्णवण्णाच - मज्झिमा मुत्तिकप्पभा
खुद्दिका कुन्दवण्णाच - सब्बा वन्दामि धातुयो

महन्ता पञ्च नालि च - मज्झिमा पञ्च नालि च
छ नालि खुद्दिका चेव - सब्बा वन्दामि धातुयो ॥

अट्ठ दोणं चक्खुमतो सरीरे
सत्त दोणं जम्बुदीपे महेन्ति
एकं च दोणं पुरिसवरुत्तमस्स
राम गामे नागराजा महेन्ति

एका ही दाठा तिदिवेहि पूजिता
एका पन गन्धार पुरे महीयति
कालिंगरञ्ञो विजिते पुरेकं
एकं पुन नागराजा महेन्ति

तस्सेव तेजेन अयं वसुन्धरा
आयाग सेट्ठेहि मही अलंकता
एवं इमं चक्खुमतो सरीरं
सुसक्कतं सक्कतसक्कतेहि

देविन्द नागिन्द नरिन्द पूजितो
मनुस्स सेट्ठेहि तथे व पूजितो
तं वन्दाम पञ्जलिका भवित्वा
बुद्धो हवे कप्प सतेहि दुल्लभो ॥

त्रिविध चेतिय वंदना

वन्दामि चेतियं सब्बं - सब्बठानेसु पतिट्ठितं
सारीरिक धातु महाबोधिं - बुद्ध रूपं सकलं सदा

यस्स मूले निसिन्नोव - सब्बारि विजयं अका
पत्तो सब्बञ्ञुतं सत्था - वन्दे तं बोधि पादपं

इमे एते महाबोधि - लोकनाथेन पूजिता
अहम्पि ते नमस्सामि - बोधिराजा नमत्थु ते ॥

बुद्ध पूजा (पाली)

दीप पूजा

घनसारप्पदित्तेन - दीपेन तमधंसिना
तिलोक दीपं सम्बुद्धं - पूजयामि तमोनुदं

सुगन्ध पूजा

सुगन्धिकाय वदनं - अनन्त गुण गन्धिना
सुगन्धिनाहं गन्धेन - पूजयामि तथागतं

पुष्प पूजा

वण्ण गन्ध गुणोपेतं - एतं कुसुम सन्ततिं
पूजयामि मुनिन्दस्स - सिरीपाद सरोरूहे
पूजेमि बुद्धं कुसुमेन नेन - पुञ्ञेन मेतेन लभामि मोक्खं
पुप्फं मिलायाति यथा इदं मे - कायो तथा याति विनासभावं

जल पूजा

सुगन्धं सीतलं कप्पं - पसन्न मधुरं सुभं
पानीयमेतं भगवा - पतिगण्हातु मुत्तमं

भोजन पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते - भोजनं परिकप्पितं
अनुकम्पं उपादाय - पतिगण्हातु मुत्तमं

औषध पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते - गिलानपच्चयं इमं
अनुकम्पं उपादाय - पतिगण्हातु मुत्तमं

अधिवासेतु नो भन्ते - सब्बं सद्धाय पूजितं
अनुकम्पं उपादाय - पतिगण्हातु मुत्तमं ॥

साधु ! साधु !! साधु !!!

बुद्ध पूजा (हिन्दी)

मेरे स्वामि, भगवान बुद्ध जी, सभी राग द्वेष मोह को, नष्ट किये हैं। वीतरागी हैं, वीतदोषी हैं, वीतमोही हैं। सभी पापों को, दूर किये हैं। सभी पुण्य धर्मों को, बढ़ाये हैं। अपने तन मन वाणी को, शुद्ध किये हैं। बिना गुरू के उपदेश से, परम चार आर्य सत्य को, प्राप्त किये हैं।

मेरे बुद्ध जी, सत्य ज्ञान पाये हैं, दूसरों को भी, सत्य ज्ञान पाने के लिए, धर्म बताये हैं। मेरे बुद्ध जी, भव सागर से पार गये हैं, दूसरों को भी, भव सागर से पार जाने का, मार्ग दिखाये हैं। मेरे बुद्ध जी, परिनिर्वाण को पाये है, दूसरों को भी, परिनिर्वाण होने के लिए, धर्म बताये है।

मेरे बुद्ध जी, अनाथों के लिए, नाथ है। असहायों के लिए, सहाय करने वाले हैं। सभी प्राणियों को, हित सुख देने वाले है। मुक्ति ज्ञान महिमा से, नित्य हीं चलने वाले हैं।

मेरे बुद्ध जी त्रिकालदर्शी हैं, विशारद ज्ञानी हैं, दसबलधारी हैं, महाकरुणावान हैं। इन सभी अनंत गुणों से, परिपूर्ण हुए हैं। उन वंदनीय पूजनीय, महा मुनिवर को...

ये जगमागता दीया की प्रकाश, पूजा करता हूँ।

सर्व दिशाओं में फैलने वाले, ये सुगंध पूजा करता हूँ।

अनेक वर्णों से खिले हुए, ये पुष्प पूजा करता हूँ।

ये पवित्र शीतल जल, पूजा करता हूँ।

अनेक रसों से भरे हुये, ये मधुर औषध, पूजा करता हूँ।

ये सभी पूजायें, भगवान बुद्ध को, आदर गौरव से, पूजा करता हूँ ...

पूजा हो.. पूजा हो.. पूजा हो..

साधु ! साधु !! साधु !!!

देवता आराधना

समन्ता चक्कवालेसु अत्रा गच्छन्तु देवता
सद्धम्मं मुनिराजस्स सुनंतु सग्गमोक्खदं
परित्तस्सवणकालो अयं भदन्ता
परित्तस्सवणकालो अयं भदन्ता
परित्तधम्मस्सवणकालो अयं भदन्ता।

पटिच्चसमुप्पाद समुदयो-निरोधो

अविज्जा पच्चया संखारा, संखार पच्चया विञ्ञाणं, विञ्ञाण पच्चया नामरूपं, नामरूप पच्चया सळायतनं, सळायतन पच्चया फस्सो, फस्स पच्चया वेदना, वेदना पच्चया तण्हा, तण्हा पच्चया उपादानं, उपादान पच्चया भवो, भव पच्चया जाति, जाति पच्चया जरामरणं सोक परिदेव दुक्ख दोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति।

अविज्जायत्वेव असेसविरागनिरोधा संखारनिरोधो, संखारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो, विञ्ञाणनिरोधा नामरूप निरोधो, नामरूपनिरोधा सळायतननिरोधो, सळायतननिरोधा फस्सनिरोधो, फस्सनिरोधा वेदनानिरोधो, वेदना निरोधा तण्हानिरोधो, तण्हानिरोधा उपादाननिरोधो, उपदाननिरोधा भवनिरोधो, भवनिरोधा जातिनिरोधो, जातिनिरोधा जरा मरणं सोक परिदेव दुक्ख दोमनस्सुपायासा निरूज्झन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति।

अनेकजातिसंसारं - सन्धाविस्सं अनिब्बिसं
गहकारकं गवेसन्तो - दुक्खा जाति पुनप्पुनं
गहकारक दिट्ठोसि - पुन गेहं न काहसी
सब्बा ते फासुका भग्गा - गहकूटं विसंखितं
विसंखारगतं चित्तं - तण्हानं खयमज्झगा'ति।

लोकावबोध सुत्तं

वुत्तं हेतं भगवता। वुत्तमरहता'ति मे सुतं।

लोको भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो । लोकस्मा तथागतो विसंयुत्तो । लोकसमुदयो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो। लोकसमुदयो तथागतस्स पहीनो। लोकनिरोधो भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धो । लोकनिरोधो तथागतस्स सच्छिकतो। लोकनिरोधगामिनी पटिपदा भिक्खवे तथागतेन अभिसम्बुद्धा । लोकनिरोधगामिनी पटिपदा तथागतस्स भाविता।

यं भिक्खवे सदेवकस्स लोकस्स समारकस्स सब्रम्हकस्स, सस्समणब्राम्हणिया पजाय सदेवमनुस्साय दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं पत्तं परियेसितं अनुविचरितं मनसा, यस्मा तं तथागतेन अभिसम्बुद्धं तस्मा तथागतो'ति वुच्चति।

यञ्च भिक्खवे रत्तिं तथागतो अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुज्झति, यञ्च रत्तिं अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया

परिनिब्बायति, यं एतस्मिं अन्तरे भासति लपति निद्दिसति, सब्बं तं तथेव होति, नो अञ्ञथा । तस्मा तथागतो'ति वुच्चति ।

यथावादी भिक्खवे तथागतो तथाकारी । यथाकारी तथागतो तथावादी । इति यथावादी तथाकारी, यथाकारी तथावादी, तस्मा तथागतो'ति वुच्चति ।

सदेवके भिक्खवे लोके समारके सब्रम्हके सस्समणब्राम्हणिया पजाय सदेवमनुस्साय तथागतो अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती। तस्मा तथागतो'ति वुच्चति।

एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति।

सब्बलोकं अभिञ्ञाय - सब्बलोके यथातथं
सब्बलोकविसंयुत्तो - सब्बलोके अनूपयो

सब्बे सब्बाभिभू धीरो - सब्बगन्थप्पमोचनो
फुट्ठस्स परमा सन्ति - निब्बानं अकुतोभयं

एस खीणासवो बुद्धो - अनीघो छिन्नसंसयो
सब्बकम्मक्खयं पत्तो - विमुत्तो उपधिसंखयो

एस सो भगवा बुद्धो - एस सीहो अनुत्तरो
सदेवकस्स लोकस्स - ब्रम्हचक्कं पवत्तयि

इति देवा मनुस्सा च - ये बुद्धं सरणं गता
संगम्म तं नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं

दन्तो दमयतं सेट्ठो - सन्तो समयतं इसि
मुत्तो मोचयतं अग्गो - तिण्णो तारयतं वरो

इति हेतं नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं
सदेवकस्मिं लोकस्मिं - नत्थि ते पटिपुग्गलोति

अयम्पि अत्थो वुत्तो भगवता इति मे सुतन्ति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

महामंगल सुत्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अञ्ञतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवन्ना केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसंकमि। उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि।

बहू देवा मनुस्सा च - मंगलानि अचिन्तयुं
आकंखमाना सोत्थानं - ब्रुहि मंगलमुत्तमं

असेवना च बालानं - पण्डितानञ्च सेवना
पूजा च पूजनीयानं - एतं मंगलमुत्तमं

पतिरूपदेसवासो च - पुब्बे च कतपुञ्ञता
अत्तसम्मापणिधि च - एतं मंगलमुत्तमं

बाहुसच्चञ्च सिप्पञ्च - विनयो च सुसिक्खितो
सुभासिता च या वाचा - एतं मंगलमुत्तमं

मातापितु उपट्ठानं - पुत्त दारस्स संगहो
अनाकुला च कम्मन्ता - एतं मंगलमुत्तमं

दानञ्च धम्मचरिया च - ञातकानञ्च संगहो
अनवज्जानि कम्मानि - एतं मंगलमुत्तमं

आरति विरति पापा - मज्जपाना च संयमो
अप्पमादो च धम्मेसु - एतं मंगलमुत्तमं

गारवो च निवातो च - सन्तुट्ठी च कतञ्ञुता
कालेन धम्मसवणं - एतं मंगलमुत्तमं

खन्ती च सोवचस्सता - समणानञ्च दस्सनं
कालेन धम्मसाकच्छा - एतं मंगलमुत्तमं

तपो च ब्रम्हचरियञ्च - अरियसच्चान दस्सनं
निब्बान सच्छिकिरिया च - एतं मंगलमुत्तमं

फुट्ठस्स लोकधम्मेहि - चित्तं यस्स न कम्पति
असोकं विरजं खेमं - एतं मंगलमुत्तमं

एतादिसानि कत्वान - सब्बत्थमपराजिता
सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति तं - तेसं मंगलमुत्तमन्ति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

आलवक सुत्तं

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा आलवियं विहरति आलवकस्स यक्खस्स भवने । अथ खो आलवको यक्खो येन भगवा तेनुपसंकमि । उपसंकमित्वा भगवन्तं एतदवोच ।

निक्खम समणाति । साधावुसोति भगवा निक्खमि । पविस समणाति । साधावुसोति भगवा पाविसि ।

दुतियम्पि खो आलवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच । निक्खम समणाति । साधावुसोति भगवा निक्खमि । पविस समणाति । साधावुसोति भगवा पाविसि ।

ततियम्पि खो आलवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच । निक्खम समणाति । साधावुसोति भगवा निक्खमि । पविस समणाति । साधावुसोति भगवा पाविसि ।

चतुत्थम्पि खो आलवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच । निक्खम समणाति । नख्वाहं तं आवुसो निक्खमिस्सामि । यं ते करणीयं तं करोहीति ।

पञ्हं तं समण पुच्छिस्सामि । सचे मे न व्याकरिस्ससि, चित्तं वा ते खिपिस्सामि, हदयं वा ते फालेस्सामि, पादेसु वा गहेत्वा पारगंगायं खिपिस्सामीति ।

नख्वाहन्तं आवुसो पस्सामि सदेवके लोके समारके

सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय यो मे चित्तं वा खिपेय्य, हदयं वा फालेय्य, पादेसु वा गहेत्वा पारगंगाय खिपेय्य, अपि च त्वं आवुसो पुच्छ, यदाकंखसीति ।

अथ खो आलवको यक्खो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि

किंसूध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं - किंसु सुचिण्णो सुखमावहाति
किंसु हवे साधुतरं रसानं - कथं जीविं जीवितमाहु सेट्ठन्ति

सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं - धम्मो सुचिण्णो सुखमावहाति
सच्चं हवे साधुतरं रसानं - पञ्ञाजीविं जीवितमाहु सेट्ठन्ति

कथंसु तरती ओघं - कथंसु तरती अण्णवं
कथंसु दुक्खं अच्चेति - कथंसु परिसुज्झति

सद्धाय तरती ओघं - अप्पमादेन अण्णवं
विरियेन दुक्खं अच्चेति - पञ्ञाय परिसुज्झति

कथंसु लभते पञ्ञं - कथंसु विन्दते धनं
कथंसु कित्तिं पप्पोति - कथं मित्तानि गन्थति
अस्मा लोका परं लोकं - कथं पेच्च न सोचति

सद्दहानो अरहतं - धम्मं निब्बानपत्तिया
सुस्सूसा लभते पञ्ञं - अप्पमत्तो विचक्खणो

पतिरूपकारी धुरवा - उट्ठाता विन्दते धनं
सच्चेन कित्तिं पप्पोति - ददं मित्तानि गन्थति

यस्सेते चतुरो धम्मा - सद्धस्स घरमेसिनो
सच्चं धम्मो धिती चागो - स वे पेच्च न सोचति

इंघ अञ्ञेपि पुच्छस्सु - पुथुसमणब्राह्मणे
यदि सच्चा दमा चागा - खन्त्या भिय्यो न विज्जति

कथन्नुदानि पुच्छेय्यं - पुथु समणब्राह्मणे
सोहं अज्ज पजानामि - यो अत्थो सम्परायिको

अत्थाय वत मे बुद्धो - वासायालविमागमा
सोहं अज्ज पजानामि - यत्थ दिन्नं महप्फलं

सोहं विचरिस्सामि - गामा गामं पुरा पुरं
नमस्समानो सम्बुद्धं - धम्मस्स च सुधम्मतन्ति

एवं वत्वा आलवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच।

अभिक्कन्तं भो गोतम, अभिक्कन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूल्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति। एवमेवं भोता गोतमेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं भगवन्तं गोतमं सरणं गच्छामि। धम्मञ्च भिक्खुसंघञ्च। उपासकं मं भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतन्ति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

रतन सुत्तं

यानीध भूतानि समागतानि - भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे
सब्बेव भूता सुमना भवन्तु - अथोपि सक्कच्च सुणन्तु भासितं

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे - मेत्तं करोथ मानुसिया पजाय
दिवा च रत्तो च हरन्ति ये बलिं - तस्मा हि ने रक्खथ अप्पमत्ता

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा - सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं
न नो समं अत्थि तथागतेन - इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

खयं विरागं अमतं पणीतं - यदज्झगा सक्यमुनी समाहितो
न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चि - इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं - समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु
समाधिना तेन समो न विज्जति - इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था - चत्तारि एतानि युगानि होन्ति
ते दक्खिणेय्या सुगतस्स सावका - एतेसु दिन्नानि महप्फलानि
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

ये सुप्पयुत्ता मनसा दल्हेन - निक्कामिनो गोतमसासनम्हि
ते पतिपत्ता अमतं विगय्ह - लद्धा मुधा निब्बुतिं भुञ्जमाना

इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

यथिन्दखीलो पठविंसितो सिया - चतुब्भि वातेभि असम्पकम्पियो
तथूपमं सप्पुरिसं वदामि - यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

ये अरियसच्चानि विभावयन्ति - गम्भीरपञ्ञेन सुदेसितानि
किञ्चापि ते होन्ति भुसप्पमत्ता - न ते भवं अट्ठमं आदियन्ति
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

सहावस्स दस्सनसम्पदाय - तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति
सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छितञ्च - सीलब्बतं वापि यदत्थि किञ्चि
चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो - छचाभिठानानि अभब्बो कातुं
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

किञ्चापि सो कम्मं करोति पापकं - कायेन वाचा उद चेतसा वा
अभब्बो सो तस्स पटिच्छादाय - अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे - गिम्हानमासे पठमस्मिं गिम्हे
तथूपमं धम्मवरं अदेसयी - निब्बाणगामिं परमं हिताय
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो - अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयी
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

खीणं पुराणं नवं नत्थि सम्भवं - विरत्तचित्ता आयतिके भवस्मिं
ते खीणबीजा अविरूल्हिच्छन्दा - निब्बन्ति धीरा यथायं पदीपो
इदम्पि संघे रतनं पणीतं - एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु।

यानीध भूतानि समागतानि - भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे
तथागतं देवमनुस्सपूजितं - बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु।

यानीध भूतानि समागतानि - भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे
तथागतं देवमनुस्सपूजितं - धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु।

यानीध भूतानि समागतानि - भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे
तथागतं देवमनुस्सपूजितं - संघं नमस्साम सुवत्थि होतु।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

करणीयमेत्त सुत्तं

करणीयमत्थकुसलेन - यन्तं सन्तं पदं अभिसमेच्च
सक्को उजू च सूजू च - सुवचो चस्स मुदु अनतिमानी

सन्तुस्सको च सुभरो च - अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ती
सन्तिन्द्रियो च निपको च - अप्पगब्भो कुलेसु अननुगिद्धो

न च खुद्दं समाचरे किञ्चि - येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं
सुखिनो वा खेमिनो होन्तु - सब्बेसत्ता भवन्तु सुखितत्ता

ये केचि पाणभूतत्थि - तसा वा थावरा वा अनवसेसा
दीघा वा ये महन्ता वा - मज्झिमा रस्सकाणुकथूला

दिट्ठा वा ये व अदिट्ठा - ये च दूरे वसन्ति अविदूरे
भूता वा सम्भवेसी वा - सब्बेसत्ता भवन्तु सुखितत्ता

न परो परं निकुब्बेथ - नातिमञ्ञेथ कत्थचि नं कञ्चि
ब्यारोसना पटिघसञ्ञा - नाञ्ञमञ्ञस्स दुक्खमिच्छेय्य

माता यथा नियं पुत्तं - आयुसा एकपुत्तमनुरक्खे
एवम्पि सब्बभूतेसु - मानसं भावये अपरिमाणं

मेत्तञ्च सब्बलोकस्मिं - मानसं भावये अपरिमाणं
उद्धं अधो च तिरियञ्च - असम्बाधं अवेरं असपत्तं

तिट्ठं चरं निसिन्नो वा - सयानो वा यावतस्स विगतमिद्धो
एतं सतिं अधिट्ठेय्य - ब्रह्ममेतं विहारं इधमाहु

दिट्ठिञ्च अनुपगम्म सीलवा - दस्सनेन सम्पन्नो
कामेसु विनेय्य गेधं - नहि जातुगब्भसेय्यं पुनरेतीति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

अंगुलिमाल परित्तं

परित्तं यं भणन्तस्स - निसिन्नट्ठानधोवनं
उदकम्पि विनासेति - सब्बमेव परिस्सयं
सोत्थिना गब्भवुट्ठानं - यं च साधेति तं खणे
थेरस्संगुलिमालस्स - लोकनाथेन भासितं
कप्पट्ठायिमहातेजं - परित्तं तं भणामहे

''यतो' हं भगिनि, अरियाय जातिया जातो नाभिजानामि, सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेता, तेन सच्चेन सोत्थि ते होतु, सोत्थि गब्भस्सा'ति''।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

खन्ध परित्तं

विरूपक्खेहि मे मेत्तं - मेत्तं एरापथेहि मे
छब्यापुत्तेहि मे मेत्तं - मेत्तं कण्हागोतमकेहि च

अपादकेहि मे मेत्तं - मेत्तं दिपादकेही मे
चतुप्पदेहि मे मेत्तं - मेत्तं बहुप्पदेही मे

मा मं अपादको हिंसि - मा मं हिंसि दिपादको
मा मं चतुप्पदो हिंसि - मा मं हिंसि बहुप्पदो

सब्बे सत्ता सब्बे पाणा - सब्बे भूता च केवला
सब्बे भद्रानि पस्सन्तु - मा कञ्चि पापमागमा

अप्पमाणो बुद्धो अप्पमाणो धम्मो अप्पमाणो संघो । पमाणवन्तानि सिरिंसपानि अहिविच्छिका सतपदि उण्णानाभि सरबू मूसिका । कता मे रक्खा कता मे परित्ता पटिक्कमन्तु भूतानि । सोहं नमो भगवतो, नमो सत्तनं सम्मासम्बुद्धानन्ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

धजग्ग सुत्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि भिक्खवोति। भदन्ते ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच ।

भूतपुब्बं भिक्खवे, देवासुरसंगामो समूपब्बूल्हो अहोसि। अथ खो भिक्खवे सक्को देवानमिन्दो देवे तावतिंसे आमन्तेसि ।

सचे मारिसा देवानं संगामगतानं उप्पज्जेय भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा ममे'व तस्मिं समये धजग्गं उल्लोकेय्याथ, ममं हि वो धजग्गं उल्लोकयतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति ।

नो चे मे धजग्गं उल्लोकेय्याथ, अथ पजापतिस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ। पजापतिस्स हि वो देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति ।

नो चे पजापतिस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ, अथ वरुणस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ। वरुणस्स हि वो देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति ।

नो चे वरुणस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ, अथ ईसानस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ । ईसानस्स हि वो देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति ।

तं खो पन भिक्खवे, सक्कस्स वा देवानमिन्दस्स धजग्गं उल्लोकयतं पजापतिस्स वा देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं वरुणस्स वा देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं ईसानस्स वा देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहियेथापि नोपि पहीयेथ ।

तं किस्स हेतु ?

सक्को भिक्खवे, देवानमिन्दो अवीतरागो अवीतदोसो अवीतमोहो भीरूच्छम्भि उत्रासि पलायीति ।

अहञ्च खो भिक्खवे, एवं वदामि । सचे तुम्हाकं भिक्खवे, अरञ्ञगतानं वा रुक्खमूलगतानं वा सुञ्ञागारगतानं वा उप्पज्जेय्य भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा ममे'व तस्मिं समये अनुस्सरेय्याथ ।

इति'पि सो भगवा अरहं सम्मा सम्बुद्धो विज्जाचरण सम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति ।

ममंहि वो भिक्खवे, अनुस्सरतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति । नो चे मं अनुस्सरेय्याथ। अथ धम्मं अनुस्सरेय्याथ।

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनयिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति ।

धम्मंहि वो भिक्खवे, अनुस्सरतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति । नो चे धम्मं अनुस्सरेय्याथ । अथ संघं अनुस्सरेय्याथ ।

सुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, उजुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, ञायपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, सामीचिपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो । यदिदं चत्तारि पुरसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसंघो आहुणेय्यो, पाहुणेय्यो, दक्खिणेय्यो, अंजलिकरणीयो, अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।

संघंहि वो भिक्खवे अनुस्सरतं, यं भविस्सति भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा सो पहीयिस्सति ।

तं किस्स हेतु ?

तथागतो भिक्खवे, अरहं सम्मा सम्बुद्धो वीतरागो वीतदोसो वीतमोहो अभीरु अच्छम्भि अनुत्रासी अपलायी'ति।

इदमवोच भगवा। इदं वत्वा सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था,

अरञ्ञे रुक्खमूले वा - सुञ्ञागारेव भिक्खवो
अनुस्सरेथ सम्बुद्धं - भयं तुम्हाक नो सिया

नो चे बुद्धं सरेय्याथ - लोकजेट्ठं नरासभं
अथ धम्मं सरेय्याथ - निय्यानिकं सुदेसितं

नो चे धम्मं सरेय्याथ - निय्यानिकं सुदेसितं
अथ संघं सरेय्याथ - पुञ्ञक्खेत्तं अनुत्तरं

एवं बुद्धं सरन्तानं - धम्म संघञ्च भिक्खवो
भयं वा छम्भितत्तं वा - लोमहंसो न हेस्सतीति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तं

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा बाराणसियं विहरति इसिपतने मिगदाये। तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसि। द्वे मे भिक्खवे, अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा।

यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो गम्मो पोथुज्जनिको अनरियो अनत्थसंहितो । यो चायं अत्तकिलमथानुयोगो दुक्खो अनरियो अनत्थसंहितो । एते ते भिक्खवे, उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी ञाणकरणी उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तति ।

कतमा च सा भिक्खवे, मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी ञाणकरणी उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तति ?

अयमेव अरियो अट्ठंगिको मग्गो। सेय्यथीदं, सम्मादिट्ठि सम्मासंकप्पो सम्मावाचा सम्माकम्मन्तो सम्माआजीवो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि ।

अयं खो सा भिक्खवे, मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी ञाणकरणी उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय संवत्तति ।

इदं खो पन भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं । जातिपि दुक्खा जरापि दुक्खा व्याधिपि दुक्खो मरणम्पि दुक्खं अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो पियेहि विप्पयोगो दुक्खो यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धा दुक्खा ।

इदं खो पन भिक्खवे, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं । यायं तण्हा पोनोभविका नन्दिरागसहगता तत्रतत्राभिनन्दिनी । सेय्यथीदं, कामतण्हा भवतण्हा विभवतण्हा ।

इदं खो पन भिक्खवे, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं । यो तस्सायेव तण्हाय असेसविरागनिरोधो चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो ।

इदं खो पन भिक्खवे, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं । अयमेव अरियो अट्ठंगिको मग्गो । सेय्यथीदं, सम्मादिट्ठि सम्मासंकप्पो सम्मावाचा सम्माकम्मन्तो सम्माआजीवो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि ।

इदं दुक्खं अरियसच्चन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञेय्यन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञातन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

इदं दुक्खसमुदयं अरियसच्चन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहातब्बन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहीनन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

इदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं सच्छिकातब्बन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं सच्छिकतन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

इदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं भावेतब्बन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि ।

तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं

भावितन्ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि ञाणं उदपादि पञ्ञा उदपादि विज्जा उदपादि आलोको उदपादि।

यावकीवञ्च मे भिक्खवे, इमेसु चतुसु अरिसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं न सुविसुद्धं अहोसि। नेव तावाहं भिक्खवे, सदेवके लोके समारके सब्रम्हके सस्समणब्राम्हणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो पच्चञ्ञासिं ।

यतो च खो मे भिक्खवे, इमेसु चतुसु अरिसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं सुविसुद्धं अहोसि । अथाहं भिक्खवे, सदेवके लोके समारके सब्रम्हके सस्समणब्राम्हणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो पच्चञ्ञासिं । ञाणञ्च पन मे दस्सनं उदपादि, अकुप्पा मे चेतोविमुत्ति अयमन्तिमा जाति नत्थिदानि पुनब्भवोति।

इदमवोच भगवा। अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति। इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि, यं किञ्चि समुदयधम्मं सब्बं तं निरोधधम्मन्ति ।

पवत्तिते च पन भगवता धम्मचक्के भुम्मा देवा सद्दमनुस्सावेसुं । एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।

भुम्मानं देवानं सद्दं सुत्वा
चातुम्महाराजिका देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

चातुम्महाराजिकानं देवानं सद्दं सुत्वा
तावतिंसा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

तावतिंसानं देवानं सद्दं सुत्वा
यामा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

यामानं देवानं सद्दं सुत्वा
तुसिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

तुसितानं देवानं सद्दं सुत्वा
निम्माणरती देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

निम्माणरतीनं देवानं सद्दं सुत्वा
परनिम्मितवसवत्तीनो देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

परनिम्मितवसवत्तीनं देवानं सद्दं सुत्वा
ब्रह्मपारिसज्जा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

ब्रह्मपारिसज्जानं देवानं सद्दं सुत्वा
ब्रह्मपुरोहिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

ब्रह्मपुरोहितानं देवानं सद्दं सुत्वा
महाब्रह्मा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

महाब्रह्मानं देवानं सद्दं सुत्वा

परित्ताभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

परित्ताभानं देवानं सद्दं सुत्वा
अप्पमाणाभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

अप्पमाणाभानं देवानं सद्दं सुत्वा
आभस्सरा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

आभस्सरानं देवानं सद्दं सुत्वा
परित्तसुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

परित्तसुभानं देवानं सद्दं सुत्वा
अप्पमानसुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

अप्पमानसुभानं देवानं सद्दं सुत्वा
सुभकिण्हका देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

सुभकिण्हकानं देवानं सद्दं सुत्वा
वेहप्फला देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

वेहप्फलानं देवानं सद्दं सुत्वा
अविहा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

अविहानं देवानं सद्दं सुत्वा
अतप्पा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

अतप्पानं देवानं सद्दं सुत्वा
सुदस्सा देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

सुदस्सानं देवानं सद्दं सुत्वा
सुदस्सी देवा सद्दमनुस्सावेसुं...

सुदस्सीनं देवानं सद्दं सुत्वा अकणिट्ठका देवा सद्दमनुस्सावेसुं । एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राम्हणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति ।

इतिह तेन खणेन तेन मुहुत्तेन याव ब्रह्मलोका सद्दो अब्भुग्गञ्छि । अयञ्च दससहस्सीलोकधातु संकम्पि सम्पकम्पि सम्पवेधि । अप्पमाणो च उळारो ओभासो लोके पातुरहोसि अतिक्कम्म देवानं देवानुभावन्ति ।

अथ खो भगवा उदानं उदानेसि - अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो, अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञोति । इति हिदं आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स अञ्ञाकोण्डञ्ञो त्वेव नामं अहोसी'ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

अनत्तलक्खण सुत्तं

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा बाराणसियं विहरति इसिपतने मिगदाये । तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसि 'भिक्खवो'ति । 'भदन्ते'ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं । भगवा एतदवोच ।

रूपं भिक्खवे अनत्ता । रूपञ्च हिदं भिक्खवे, अत्ता अभविस्स। नयिदं रूपं आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च रूपे, एवं मे रूपं होतु। एवं मे रूपं मा अहोसी'ति। यस्मा च खो भिक्खवे रूपं अनत्ता। तस्मा रूपं आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति रूपे ''एवं मे रूपं होतु, एवं मे रूपं मा अहोसी''ति ।

वेदना भिक्खवे अनत्ता। वेदनाच हिदं भिक्खवे, अत्ता अभविस्स । नयिदं वेदना आबाधाय संवत्तेय्य । लब्भेथ च वेदनाय, एवं मे वेदना होतु। एवं मे वेदना मा अहोसी'ति। यस्मा च खो भिक्खवे वेदना अनत्ता। तस्मा वेदना आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति वेदनाय ''एवं मे वेदना होतु, एवं मे वेदना मा अहोसी''ति ।

सञ्ञा भिक्खवे अनत्ता। सञ्ञाच हिदं भिक्खवे, अत्ता अभविस्स । नयिदं सञ्ञा आबाधाय संवत्तेय्य । लब्भेथ च सञ्ञाय, एवं मे सञ्ञा होतु। एवं मे सञ्ञा मा अहोसी'ति। यस्मा च खो भिक्खवे सञ्ञा अनत्ता। तस्मा सञ्ञा आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति सञ्ञाय ''एवं मे सञ्ञा होतु, एवं मे सञ्ञा मा अहोसी''ति ।

संखारा भिक्खवे अनत्ता। संखाराच हिदं भिक्खवे, अत्ता अभविस्सिंसु। नयिमे संखारा आबाधाय संवत्तेय्युं। लब्भेथ च संखारेसु, एवं मे संखारा होन्तु। एवं मे संखारा मा अहेसुन्ति। यस्मा च खो भिक्खवे संखारा अनत्ता। तस्मा संखारा आबाधाय संवत्तन्ति। न च लब्भति संखारेसु ''एवं मे संखारा होन्तु, एवं मे संखारा मा अहेसुन्ति''।

विञ्ञाणं भिक्खवे अनत्ता। विञ्ञाणञ्च हिदं भिक्खवे, अत्ता अभविस्स । नयिदं विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तेय्य । लब्भेथ च विञ्ञाणे, एवं मे विञ्ञाणं होतु । एवं मे विञ्ञाणं मा अहोसी'ति । यस्मा च खो भिक्खवे विञ्ञाणं अनत्ता। तस्मा विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तति । न च लब्भति विञ्ञाणे ''एवं मे विञ्ञाणं होतु, एवं मे विञ्ञाणं मा अहोसी''ति ।

तं किं मञ्ञथ भिक्खवे रूपं निच्चं वा अनिच्चं वा' ति ? अनिच्चं भन्ते । यं पनानिच्चं, दुक्खं वा तं सुखं वा' ति ? दुक्खं भन्ते । यं पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं । एतं मम एसो हमस्मि एसो मे अत्ता'ति ? नो हेतं भन्ते ।

वेदना निच्चा वा अनिच्चा वा'ति ? अनिच्चा भन्ते । यं पनानिच्चं, दुक्खं वा तं सुखं वा'ति ? दुक्खं भन्ते । यं पनानिच्चं, दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं । एतं मम एसो हमस्मि एसो मे अत्ता'ति ? नो हेतं भन्ते ।

सञ्ञा निच्चा वा अनिच्चा वा'ति ? अनिच्चा भन्ते । यं पनानिच्चं, दुक्खं वा तं सुखं वा'ति ? दुक्खं भन्ते । यं पनानिच्चं, दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं । एतं मम एसो हमस्मि एसो मे अत्ता'ति ? नो हेतं भन्ते ।

संखारा निच्चा वा अनिच्चा वा'ति ? अनिच्चा भन्ते ।

यं पनानिच्चं, दुक्खं वा तं सुखं वा'ति ? दुक्खं भन्ते। यं पनानिच्चं, दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं। एतं मम एसो हमस्मि एसो मे अत्ता'ति ? नो हेतं भन्ते।

विञ्ञाणं निच्चं वा अनिच्चं वा'ति ? अनिच्चं भन्ते। यं पनानिच्चं दुक्खं वा तं सुखं वा'ति ? दुक्खं भन्ते। यं पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लं नु तं समनुपस्सितुं। एतं मम एसो हमस्मि एसो मे अत्ता'ति ? नो हेतं भन्ते।

तस्मातिहभिक्खवे, यंकिञ्चिरूपंअतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा यं दूरे सन्तिके वा सब्बं रूपं नेतं मम नेसोहमस्मि न मेसो अत्ता'ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं।

या काचि वेदना अतीतानागतपच्चुप्पन्ना अज्झत्ता वा बहिद्धा वा ओलारिका वा सुखुमा वा हीना वा पणीता वा या दूरे सन्तिके वा सब्बा वेदना नेतं मम नेसोहमस्मि न मेसो अत्ता'ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं।

या काचि सञ्ञा अतीतानागतपच्चुप्पन्ना अज्झत्ता वा बहिद्धा वा ओलारिका वा सुखुमा वा हीना वा पणीता वा या दूरे सन्तिके वा सब्बा सञ्ञा नेतं मम नेसोहमस्मि न मेसो अत्ता'ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं।

ये केचि संखारा अतीतानागतपच्चुप्पन्ना अज्झत्ता वा बहिद्धा वा ओलारिका वा सुखुमा वा हीना वा पणीता वा ये दूरे सन्तिके वा सब्बे संखारा नेतं मम नेसोहमस्मि न मेसो अत्ता'ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं ।

यं किञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा यं दूरे सन्तिके वा सब्बं विञ्ञाणं नेतं मम नेसोहमस्मि न मेसो अत्ता'ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं ।

एवं पस्सं भिक्खवे सुतवा अरियसावको रूपस्मिम्पि निब्बिन्दति, वेदनायपि निब्बिन्दति, सञ्ञायपि निब्बिन्दति, संखारेसुपि निब्बिन्दति, विञ्ञाणस्मिम्पि निब्बिन्दति। निब्बिन्दं विरज्जति। विरागा विमुच्चति। विमुत्तस्मिं विमुत्तमिति ञाणं होति ''खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं कतं करणीयं, नापरं इत्थत्तायाति पजानाती''ति ।

इदमवोच भगवा । अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति । इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने पञ्चवग्गियानं भिक्खूनं अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिंसूति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

आटानाटिय सुत्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति गिज्झकूटे पब्बते । अथ खो चत्तारो महाराजा महतिया च यक्खसेनाय महतिया च गन्धब्बसेनाय महतिया च कुम्भण्डसेनाय महतिया च नागसेनाय, चतुद्दिसं रक्खं ठपेत्वा, चतुद्दिसं गुम्बं ठपेत्वा, चतुद्दिसं ओवरणं ठपेत्वा अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं गिज्झकूटं ओभासेत्वा, येन भगवा तेनुपसंकमिंसु । उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । तेपि खो यक्खा अप्पेकच्चे भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे भगवता सद्धिं सम्मोदिंसु सम्मोदनीयं कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। अप्पेकच्चे येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे नामगोत्तं सावेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे तुण्हीभूता एकमन्तं निसीदिंसु ।

एकमन्तं निसिन्नो खो वेस्सवनो महाराजा भगवन्तं एतदवोच -

सन्ति हि भन्ते उळारा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते उळारा यक्खा भगवतो पसन्ना, सन्ति हि भन्ते मज्झिमा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते मज्झिमा यक्खा भगवतो पसन्ना, सन्ति हि भन्ते नीचा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते नीचा यक्खा भगवतो पसन्ना । येभुय्येन खो पन भन्ते यक्खा अप्पसन्ना येव भगवतो । तं किस्स हेतु ?

भगवा हि भन्ते पाणातिपाता वेरमणिया धम्मं देसेति, अदिन्नादाना वेरमणिया धम्मं देसेति, कामेसुमिच्छाचारा वेरमणिया धम्मं देसेति, मुसावादा वेरमणिया धम्मं देसेति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणिया धम्मं देसेति, येभुय्येन खो पन भन्ते यक्खा अप्पटिविरता येव पाणातिपाता, अप्पटिविरता अदिन्नादाना, अप्पटिविरता कामेसु मिच्छाचारा, अप्पटिविरता मुसावादा, अप्पटिविरता सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना । तेसं तं होति अप्पियं अमनापं ।

सन्ति हि भन्ते भगवतो सावका, अरञ्ञे वनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवन्ति अप्पसद्दानि अप्पनिग्घोसानि विजनवातानि मनुस्सराहसेय्यकानि पटिसल्लानसारूप्पानि । तत्थ सन्ति उळारा यक्खा निवासिनो ये इमस्मिं भगवतो पावचने अप्पसन्ना । तेसं पसादाय उग्गन्हातु भन्ते भगवा आटानाटियं रक्खं भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति ।

अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन । अथ खो वेस्सवणो महाराजा भगवतो अधिवासनं विदित्वा तायं वेलायं इमं आटानाटियं रक्खं अभासि -

विपस्सिस्स नमत्थु - चक्खुमन्तस्स सिरीमतो
सिखिस्सपि नमत्थु - सब्ब भूतानुकम्पिनो

वेस्सभुस्स नमत्थु - नहातकस्स तपस्सिनो
नमत्थु ककुसन्धस्स - मारसेनापमद्दिनो

कोणागमनस्स नमत्थु - ब्राह्मणस्स वुसीमतो
कस्सपस्स नमत्थु - विप्पमुत्तस्स सब्बधि

अंगीरसस्स नमत्थु - सक्यपुत्तस्स सिरीमतो
यो इमं धम्ममदेसेसी - सब्बदुक्खा पनूदनं

ये चापि निब्बुता लोके - यथाभूतं विपस्सिसुं
ते जना अपिसुना - महन्ता वीरसारदा

हितं देवमनुस्सानं - यं नमस्सन्ति गोतमं
विज्जाचरणसम्पन्नं - महन्तं वीतसारदं

यतो उग्गच्छती सुरियो - आदिच्चो मण्डली महा
यस्सचुग्गच्छमानस्स - संवरीपि निरुज्झति

यस्स चुग्गते सुरिये - दिवसोति पवुच्चति
रहदोपि तत्थ गम्भीरो - समुद्दो सरितोदको

एवं नं तत्थ जानन्ति - समुद्दो सरितोदको
इतो सा पुरिमा दिसा - इति नं आचिक्खती जनो

यं दिसं अभिपालेति - महाराजा यसस्सिसो
गन्धब्बानं आधिपति - धतरट्ठोति नामसो

रमती नच्चगीतेहि - गन्धब्बेहि पुरक्खतो
पुत्तापि तस्स बहवो - एकनामाति मे सुतं

असीतिं दस एको च - इन्दनामा महब्बला
ते चापि बुद्धं दिस्वान - बुद्धं आदिच्चबन्धुनं

दूरतोव नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं
नमो ते पुरिसाजञ्ञ - नमो ते पुरिसुत्तम

कुसलेन समेक्खसि, अमनुस्सापि तं वन्दन्ति सुतं नेतं अभिण्हसो तस्मा एवं वदेमसे जिनं वन्दथ गोतमं जिनं वन्दाम गोतमं विज्जा चरण सम्पन्नं बुद्धं वन्दाम गोतमं

येन पेता पवुच्चन्ति - पिसुणा पिट्ठिमंसिका
पाणातिपातिनो लुद्दा - चोरा नेकतिका जना

इतो सा दक्खिणा दिसा - इति नं आचिक्खती जनो
यं दिसं अभिपालेति - महाराजा यसस्सिसो

कुम्भण्डानं आधिपति - विरूल्हो इति नामसो
रमती नच्चगीतेहि - कुम्भण्डेहि पुरक्खतो

पुत्तापि तस्स बहवो - एकनामाति मे सुतं
असीतिं दस एको च - इन्दनामा महब्बला

ते चापि बुद्धं दिस्वान - बुद्धं आदिच्चबन्धुनं

दूरतोव नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं
नमो ते पुरिसाजञ्ञ - नमो ते पुरिसुत्तम

कुसलेन समेक्खसि, अमनुस्सापि तं वन्दन्ति सुतं नेतं अभिण्हसो तस्मा एवं वदेमसे जिनं वन्दथ गोतमं जिनं वन्दाम गोतमं विज्जा चरण सम्पन्नं बुद्धं वन्दाम गोतमं

यत्थ चोग्गच्छती सुरियो - आदिच्चो मण्डली महा
यस्स चोग्गच्छमानस्स - दिवसोपि निरूज्झति

यस्स चोग्गते सुरिये - संवरीति पवुच्चति
रहदोपि तत्थ गम्भीरो - समुद्दो सरितोदको

एवं नं तत्थ जानन्ति - समुद्दो सरितोदको
इतो सा पच्छिमा दिसा - इति नं आचिक्खती जनो
यं दिसं अभिपालेति - महाराजा यसस्सिसो

नागानञ्च आधिपति - विरूपक्खो इति नामसो
रमती नच्चगीतेहि - नागेहेव पुरक्खतो

पुत्तापि तस्स बहवो - एकनामाति मे सुत्तं
असीतिं दस एको च - इन्दनामा महब्बला

ते चापि बुद्धं दिस्वान - बुद्धं आदिच्चबन्धुनं
दूरतोव नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं
नमो ते पुरिसाजञ्ञ - नमो ते पुरिसुत्तम

कुसलेन समेक्खसि, अमनुस्सापि तं वन्दन्ति सुतं नेतं अभिण्हसो तस्मा एवं वदेमसे जिनं वन्दथ गोतमं जिनं वन्दाम गोतमं विज्जा चरण सम्पन्नं बुद्धं वन्दाम गोतमं

येन उत्तरकुरू रम्मा - महानेरू सुदस्सनो
मनुस्सा तत्थ जायन्ति - अममा अपरिग्गहा

न ते बीजं पवपन्ति - नपि नीयन्ति नंगला
अकट्ठपाकिमं सालिं परिभुञ्जन्ति मानुसा

अकणं अथुसं सुद्धं - सुगन्धं तण्डुलप्फलं
तुण्डिकीरे पचित्वान - ततो भुञ्जन्ति भोजनं

गाविं एकखुरं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं
पसुं एकखुरं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं

इत्थिवाहनं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं
पुरिसवाहनं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं

कुमारिवाहनं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं
कुमारवाहनं कत्वा - अनुयन्ति दिसोदिसं

ते याने अभिरूहित्वा सब्बादिसा अनुपरियन्ति पचारा तस्स राजिनो ।

हत्थियानं अस्सयानं - दिब्बं यानं उपट्ठितं

पासादा सिविका चेव - महाराजस्स यसस्सिनो
तस्स च नगरा अहू - अन्तलिक्खे सुमापिता

आटानाटा कुसिनाटा परकुसिनाटा नाटपुरिया परकुसितनाटा, उत्तरेन कपीवन्तो जनोघमपरेन च, नवनवतियो अम्बर अम्बरवतियो आलकमन्दा नाम राजधानि। कुवेरस्स हि खो पन मारिस महाराजस्स विसाणा नाम राजधानि तस्मा कुवेरो महाराजा वेस्सवणोति पवुच्चति। पच्चे सन्तो पकासेन्ति ततोला तत्तला ततोतला, ओजसि तेजसि ततोजसि सूरोराजा अरिट्ठो नेमि, रहदोपि तत्थ धरणी नाम, यतो मेघा पवस्सन्ति वस्सा यतो पतायन्ति, सभापि तत्थ भगलवती नाम यत्थ यक्खा पयिरूपासन्ति।

तत्थ निच्चफला रूक्खा - नानादिजगणायुता
मयुरकोञ्चाभिरूदा - कोकिलादिहि वग्गुभि

जीवंजीवक सद्देत्थ - अथो ओट्ठवचित्तका
कुकुत्थका कुलीरका - वने पोक्खरसातका

सुकसालिकसद्देत्थ - दण्डमानवकानि च
सोभति सब्बकालं सा - कुवेरनलिनी सदा

इतो सा उत्तरा दिसा - इति नं आचिक्खती जनो
यं दिसं अभिपालेति - महाराजा यसस्सिसो

यक्खानं आधिपति - कुवेरो इति नामसो
रमती नच्चगीतेहि - यक्खेहि पुरक्खतो

पुत्तापि तस्स बहवो - एकनामाति मे सुत्तं
असीतिं दस एको च - इन्दनामा महब्बला

ते चापि बुद्धं दिस्वान - बुद्धं आदिच्चबन्धुनं
दूरतोव नमस्सन्ति - महन्तं वीतसारदं
नमो ते पुरिसाजञ्ञ - नमो ते पुरिसुत्तम

कुसलेन समेक्खसि, अमनुस्सापि तं वन्दन्ति सुतं नेतं अभिण्हसो तस्मा एवं वदेमसे जिनं वन्दथ गोतमं जिनं वन्दाम गोतमं विज्जाचरणसम्पन्नं बुद्धं वन्दाम गोतमन्ति ।

अयं खो सा मारिस आटानाटिया रक्खा भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति । यस्स कस्सचि मारिस भिक्खुस्स वा भिक्खुनीया वा उपासकस्स वा उपासिकाय वा, अयं आटानाटिया रक्खा। सुग्गहिता भविस्सति समत्ता परियापुता। तञ्चे अमनुस्सो;

यक्खो वा यक्खिनी वा यक्खपोतको वा यक्खपोतिका वा यक्खमहामत्तो वा यक्खपारिसज्जो वा यक्खपचारो वा, गन्धब्बो वा गन्धब्बी वा गन्धब्बपोतको वा गन्धब्ब पोतिका वा गन्धब्बमहामत्तो वा गन्धब्ब पारिसज्जो वा गन्धब्बपचारो वा, कुम्भण्डो वा कुम्भण्डी वा कुम्भण्डपोतको वा कुम्भण्डपोतिका वा कुम्भण्डमहामत्तो वा कुम्भण्डपारिसज्जो वा कुम्भण्डपचारो वा, नागो वा नागिनी वा नागपोतको वा नागपोतिका वा नागमहामत्तो वा नागपारिसज्जो वा नागपचारो वा, पदुट्ठचित्तो ;

भिक्खुं वा भिक्खुनिं वा उपासकं वा उपासिकं वा गच्छन्तं वा अनुगच्छेय्य, ठितं वा उपतिट्ठेय्य, निसिन्नं वा उपनिसीदेय्य, निपन्नं वा उपनिपज्जेय्य । न मे सो मारिस अमनुस्सो लभेय्य गामेसु वा निगमेसु वा सक्कारं वा गरूकारं वा । न मे सो मारिस अमनुस्सो लभेय्य आलकमन्दाय राजधानिया वत्थुं वा वासं वा । न मे सो मारिस अमनुस्सो लभेय्य यक्खानं समितिं गन्तुं, अपिस्सु नं मारिस अमनुस्सा अनवय्हम्पि नं करेय्युं अविवय्हं ।

अपिस्सु नं मारिस अमनुस्सा अत्ताहिपि परिपुण्णाहि परिभासाहि परिभासेय्युं, अपिस्सु नं मारिस अमनुस्सा रित्तम्पिस्स पत्तं सीसे निक्कुज्जेय्युं, अपिस्सु नं मारिस अमनुस्सा सत्तधापिस्स मुद्धं फालेय्युं ।

सन्ति हि मारिस अमनुस्सा चण्डा रूद्दा रभसा, ते नेव महाराजानं आदियन्ति, न महाराजानं पुरिसकानं आदियन्ति, न महाराजानं पुरिसकानं पुरिसकानं आदियन्ति, ते खो ते मारिस अमनुस्सा महाराजानं अवरूद्धा नाम वुच्चन्ति ।

सेय्यथापि मारिस रञ्ञो मागधस्स विजिते महा चोरा, ते नेव रञ्ञो मागधस्स आदियन्ति, न रञ्ञो मागधस्स पुरिसकानं आदियन्ति, न रञ्ञो मागधस्स पुरिसकानं पुरिसकानं आदियन्ति, ते खो ते मारिस महाचोरा रञ्ञो मागधस्स अवरूद्धा नाम वुच्चन्ति ।

एवमेव खो मारिस, सन्ति हि अमनुस्सा चण्डा रूद्धा रभसा, ते नेव महाराजानं आदियन्ति, न महाराजानं पुरिसकानं आदियन्ति, न महाराजानं पुरिसकानं पुरिसकानं आदियन्ति, ते खो ते मारिस अमनुस्सा महाराजानं अवरूद्धा नाम वुच्चन्ति ।

यो हि कोचि मारिस अमनुस्सो; यक्खो वा यक्खिनी वा यक्खपोतको वा यक्खपोतिका वा यक्खमहामत्तो वा यक्खपारिसज्जो वा यक्खपचारो वा, गन्धब्बो वा गन्धब्बी वा गन्धब्बपोतको वा गन्धब्बपोतिका वा गन्धब्बमहामत्तो वा गन्धब्बपारिसज्जो वा गन्धब्बपचारो वा, कुम्भण्डो वा कुम्भण्डी वा कुम्भण्डपोतको वा कुम्भण्डपोतिका वा कुम्भण्डमहामत्तो वा कुम्भण्डपारिसज्जो वा कुम्भण्डपचारो वा, नागो वा नागिनी वा नागपोतको वा नागपोतिका वा नागमहामत्तो वा नागपारिसज्जो वा नागपचारो वा, पदुट्ठचित्तो;

भिक्खुं वा भिक्खुनिं वा उपासकं वा उपासिकं वा गच्छन्तं वा अनुगच्छेय्य, ठितं वा उपतिट्ठेय्य, निसिन्नं वा उपनिसीदेय्य, निपन्नं वा उपनिपज्जेय्य, इमेसं यक्खानं महायक्खानं, सेनापतीनं महासेनापतीनं, उज्झापेतब्बं विक्कन्दितब्बं विरवितब्बं; अयं यक्खो गण्हाति, अयं यक्खो आविसति, अयं यक्खो हेठेति, अयं यक्खो विहेठेति, अयं यक्खो हिंसति, अयं यक्खो विहिंसति, अयं यक्खो न मुञ्चतीति ।

कतमेसं यक्खानं महायक्खानं सेनापतीनं महासेनापतीनं ?

इन्दो सोमो वरूणो च - भारद्वाजो पजापती
चन्दनो कामसेट्ठो च - किन्नि घण्डु निघण्डु च

पनादो ओपमञ्ञो च - देवसूतो च मातली
चित्तसेनो च गन्धब्बो - नलोराजा जनेसभो

सातागिरो हेमवतो - पुण्णको करतियो गुलो
सीवको मुचलिन्दो च - वेस्सामित्तो युगन्धरो

गोपालो सुप्पगेधो च - हिरिनेत्ती च मन्दियो
पञ्चालचण्डो आलवको
- पज्जुन्नो सुमनो सुमुखो दधीमुखो

मणि माणि चरो दीघो - अथो सेरिस्सको सह

इमेसं यक्खानं महायक्खानं, सेनापतीनं महासेनापतीनं, उज्झापेतब्बं विक्कन्दितब्बं विरवितब्बं; अयं यक्खो गण्हाति, अयं यक्खो आविसति, अयं यक्खो हेठेति, अयं यक्खो विहेठेति, अयं यक्खो हिंसति, अयं यक्खो विहिंसति, अयं यक्खो न मुञ्चतीति ।

अयं खो सा मारिस आटानाटिया रक्खा भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति। हन्द च दानि मयं मारिस गच्छाम। बहुकिच्चा मयं बहुकरणीयाति ।

यस्सदानि तुम्हे महाराजानो कालं मञ्ञथाति। अथ खो चत्तारो महाराजानो उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु। तेपि खो यक्खा उट्ठायासना अप्पेकच्चे भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे भगवता सद्धिं सम्मोदिंसु सम्मोदनीयं कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु। अप्पेकच्चे येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे नामगोत्तं सावेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु। अप्पेकच्चे तुण्हीभूता तत्थेवन्तरधायिंसुति।

अथ खो भगवा तस्मा रत्तिया अच्चयेन भिक्खू आमन्तेसि- ''इमं भिक्खवे रत्तिं चत्तारो महाराजानो, महतिया च यक्खसेनाय महतिया च गन्धब्बसेनाय महतिया च कुम्भण्डसेनाय महतिया च नागसेनाय, चतुद्दिसं रक्खं ठपेत्वा, चतुद्दिसं गुम्बं ठपेत्वा, चतुद्दिसं ओवरणं ठपेत्वा अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं गिज्झकूटं ओभासेत्वा, येन भगवा तेनुपसंकमिंसु। उपसंकमित्वा मं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु।

तेपि खो भिक्खवे यक्खा अप्पेकच्चे मं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु, अप्पेकच्चे मम सद्धिं सम्मोदिंसु सम्मोदनीयं कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे येनाहं तेनञ्जलिं पणामेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे नामगोत्तं सावेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु । अप्पेकच्चे तुण्हीभूता एकमन्तं निसीदिंसु ।

एकमन्तं निसिन्नो खो भिक्खवे वेस्सवनो महाराजा

मं एतदवोच ।

सन्ति हि भन्ते उळारा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते उळारा यक्खा भगवतो पसन्ना, सन्ति हि भन्ते मज्झिमा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते मज्झिमा यक्खा भगवतो पसन्ना, सन्ति हि भन्ते नीचा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना, सन्ति हि भन्ते नीचा यक्खा भगवतो पसन्ना। येभुय्येन खो पन भन्ते यक्खा अप्पसन्ना येव भगवतो । तं किस्स हेतु ?

भगवा हि भन्ते पाणातिपाता वेरमणिया धम्मं देसेति, अदिन्नादाना वेरमणिया धम्मं देसेति, कामेसुमिच्छाचारा वेरमणिया धम्मं देसेति, मुसावादा वेरमणिया धम्मं देसेति, सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणिया धम्मं देसेति, येभुय्येन खो पन भन्ते यक्खा अप्पटिविरता येव पाणातिपाता, अप्पटिविरता अदिन्नादाना, अप्पटिविरता कामेसु मिच्छाचारा, अप्पटिविरता मुसावादा, अप्पटिविरता सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना। तेसं तं होति अप्पियं अमनापं ।

सन्ति हि भन्ते भगवतो सावका, अरञ्ञे वनपत्थानि पन्तानि सेनासनानि पटिसेवन्ति अप्पसद्दानि अप्पनिग्घोसानि विजनवातानि मनुस्सराहसेय्यकानि पटिसल्लानसारूप्पानि । तत्थ सन्ति उळारा यक्खा निवासिनो ये इमस्मिं भगवतो पावचने अप्पसन्ना । तेसं पसादाय उग्गन्हातु भन्ते भगवा आटानाटियं रक्खं भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति ।

अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन । अथ खो वेस्सवणो महाराजा भगवतो अधिवासनं विदित्वा तायं वेलायं इमं आटानाटियं रक्खं अभासि -

विपस्सिस्स नमत्थु - चक्खुमन्तस्स सिरीमतो
सिखिस्सपि नमत्थु - सब्ब भूतानुकम्पिनो

...पे...

मणि माणि चरो दीघो - अथो सेरिस्सको सह

इमेसं यक्खानं महायक्खानं, सेनापतीनं महासेनापतीनं, उज्झापेतब्बं विक्कन्दितब्बं विरवितब्बं; अयं यक्खो गण्हाति, अयं यक्खो आविसति, अयं यक्खो हेठेति, अयं यक्खो विहेठेति, अयं यक्खो हिंसति, अयं यक्खो विहिंसति, अयं यक्खो न मुञ्चतीति ।

अयं खो सा मारिस आटानाटिया रक्खा भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति । हन्द च दानि मयं मारिस गच्छाम । बहुकिच्चा मयं बहुकरणीयाति ।

यस्सदानि तुम्हे महाराजानो कालं मञ्ञथाति । अथ खो चत्तारो महाराजानो उट्ठायासना मं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । तेपि खो भिक्खवे, यक्खा उट्ठायासना, अप्पेकच्चे मं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे मया सद्धिं सम्मोदिंसु । सम्मोदनीयं कथं साराणीयं

वीतिसारेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे येनाहं भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे नामगोत्तं सावेत्वा तत्थेवन्तरधायिंसु । अप्पेकच्चे तुण्हीभूता तत्थेवन्तरधायिंसुति।

उग्गण्हाथ भिक्खवे आटानाटियं रक्खं, पिरयापुनाथ भिक्खवे आटानाटियं रक्खं,धारेथ भिक्खवे आटानाटियं रक्खं । अत्थसंहिता भिक्खवे आटानाटिया रक्खा, भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं उपासिकानं गुत्तिया रक्खाय अविहिंसाय फासुविहारायाति ।

इदमवोच भगवा । अत्तमना ते भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

इसिगिलि सुत्तं

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा राजगहे विहरति इसिगिलिस्मिं पब्बते । तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि भिक्खवो'ति । भदन्ते'ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं । भगवा एतदवोच ।

पस्सथ नो तुम्हे भिक्खवे, एतं वेभारं पब्बतन्ति ? एवं भन्ते। एतस्सपि खो भिक्खवे, वेभारस्स पब्बतस्स अञ्ञाव समञ्ञा अहोसि अञ्ञापञ्ञत्ति ।

पस्सथ नो तुम्हे भिक्खवे, एतं पण्डवं पब्बतन्ति? एवं भन्ते । एतस्सपि खो भिक्खवे, पण्डवस्स पब्बतस्स अञ्ञाव समञ्ञा अहोसि अञ्ञापञ्ञत्ति ।

पस्सथ नो तुम्हे भिक्खवे, एतं वेपुल्लं पब्बतन्ति? एवं भन्ते । एतस्सपि खो भिक्खवे, वेपुल्लस्स पब्बतस्स अञ्ञाव समञ्ञा अहोसि अञ्ञापञ्ञत्ति ।

पस्सथ नो तुम्हे भिक्खवे, एतं गिज्झकूटं पब्बतन्ति? एवं भन्ते । एतस्सपि खो भिक्खवे, गिज्झकूटस्स पब्बतस्स अञ्ञाव समञ्ञा अहोसि अञ्ञापञ्ञत्ति ।

पस्सथ नो तुम्हे भिक्खवे, इमं इसिगिलिं पब्बतन्ति? एवं भन्ते । इमस्स खो पन भिक्खवे, इसिगिलिस्स पब्बतस्स एसाव समञ्ञा अहोसि एसा पञ्ञत्ति ।

भूतपुब्बं भिक्खवे पञ्चपच्चेकबुद्धसतानि इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासिनो अहेसुं । ते इमं पब्बतं पविसन्ता दिस्सन्ति । पविट्ठा न दिस्सन्ति ।

तमेनं मनुस्सा दिस्वा एवमाहंसु । अयं पब्बतो इमे इसी गिलतीति इसिगिलि इसिगिलीत्वेव समञ्ञा उदपादि ।

आचिक्खिस्सामि भिक्खवे, पच्चेकबुद्धानं नामानि । कित्तयिस्सामि भिक्खवे, पच्चेकबुद्धानं नामानि । देसिस्सामि भिक्खवे, पच्चेकबुद्धानं नामानि । तं सुणाथ । साधुकं

मनसिकरोथ भासिस्सामीति।

एवं भन्ते'ति खो ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच -

अरिट्ठो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

उपरिट्ठो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

तगरसिखी नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

यसस्सी नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

सुदस्सनो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

पियदस्सी नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

गन्धारो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

पिण्डोलो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं

इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

उपासभो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

नीतो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

तथो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

सुतवा नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

भावितत्तो नाम भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि ।

ये सत्तसारा अनीघा निरासा
पच्चेकमेवज्झगमुं सुबोधिं
तेसं विसल्लानं नरुत्तमानं
नामानि मे कित्तयतो सुणाथ

अरिट्ठो उपरिट्ठो तगरसिखी यसस्सी
सुदस्सनो पियदस्सी च बुद्धो
गन्धारो पिण्डोलो उपासभो च
नीतो तथो सुतवा भावितत्तो

सुम्भो सुभो मेथुलो अट्ठमो च
अथस्सुमेघो अनीघो सुदाठो
पच्चेकबुद्धा भवनेत्तिखीणा
हिंगू च हिंगो च महानुभावा

द्वेजालिनो मुनिनो अट्ठको च
अथ कोसलो बुद्धो अथो सुबाहु
उपनेमिसो नेमिसो सन्तचित्तो
सच्चो तथो विरजो पण्डितो च

कालूपकाला विजितो जितो च
अंगो च पंगो च गुतिज्जितो च
पस्सी जही उपधिं दुक्खमूलं
अपराजितो मारबलं अजेसि

सत्था पवत्ता सरभंगो लोमहंसो
उच्चंगमायो असितो अनासवो
मनोमयो मानच्छिदो च बन्धुमा
तदाधिमुत्तो विमलो च केतुमा

केतुम्बरागो च मातंगो अरियो
अथ'च्चुतो अच्चुतगामब्यामको
सुमंगलो दब्बिलो सुप्पतिट्ठितो
असय्हो खेमाभिरतो च सोरतो

दुरन्नयो संघो अथो'पि उच्चयो
अपरो मुनी सय्हो अनोमनिक्कमो
आनन्दोनन्दो उपनन्दो द्वादस
भारद्वाजो अन्तिमदेहधारी

बोधी महानामो अथोपि उत्तरो
केसी सिखी सुन्दरो भारद्वाजो
तिस्सूपतिस्सा भवबन्धनच्छिदा
उपसीदरी तण्हच्छिदो च सीदरी

बुद्धो अहू मंगलो वीतरागो
उसभच्छिदा जालिनिं दुक्खमूलं
सन्तं पदं अज्झगमूपनीतो
उपोसथो सुन्दरो सच्चनामो

जेतो जयन्तो पदुमो उप्पलो च
पदुमुत्तरो रक्खितो पब्बतो च
मानत्थद्धो सोभितो वीतरागो
कण्हो च बुद्धो सुविमुत्तचित्तो

एते च अञ्ञे च महानुभावा
पच्चेकबुद्धा भवनेत्तिखीणा
ते सब्बसंगातिगते महेसी
परिनिब्बुते वन्दथ अप्पमेय्येति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

महाकस्सपत्थेर बोज्झंग

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेलुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मा महाकस्सपो पिप्फलीगुहायं विहरति आबाधिको दुक्खितो बाल्हगिलानो।

अथ खो भगवा सायन्हसमयं पतिसल्लाना वुट्ठितो येनायस्मा महाकस्सपो तेनुपसंकमि। उपसंकमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा आयस्मन्तं महाकस्सपं एतदवोच -

कच्चि ते कस्सप खमनीयं ? कच्चि यापनीयं ? कच्चि दुक्खा वेदना पटिक्कमन्ति नो अभिक्कमन्ति ? पटिक्कमोसानं पञ्ञायति नो अभिक्कमोति ?

न मे भन्ते खमनीयं। न यापनीयं। बाल्हा मे दुक्खा वेदना अभिक्कमन्ति नो पटिक्कमन्ति। अभिक्कमोसानं पञ्ञायति नो पटिक्कमोति।

सत्तिमे कस्सप बोज्झंगा मया सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति।

कतमे सत्त ?

सतिसम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

धम्मविचय सम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो

भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

विरियसम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पीतिसम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पस्सद्धिसम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

समाधिसम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

उपेक्खासम्बोज्झंगो खो कस्सप, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

इमे खो कस्सप, सत्तबोज्झंगा मया सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति ।

तग्घ भगव, बोज्झंगा। तग्घ सुगत, बोज्झंगा'ति।

इदमवोच भगवा । अत्तमनो आयस्मा महाकस्सपो भगवतो भासितं अभिनन्दि। वुट्ठाहि चायस्मा महाकस्सपो तम्हा आबाधा। तथा पहीनो चायस्मतो महाकस्सपस्स सो आबाधो अहोसी'ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

महामोगल्लानत्थेर बोज्झंग

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेलुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मा महामोग्गल्लानो गिज्झकूटे पब्बते विहरति आबाधिको दुक्खितो बाल्हगिलानो।

अथ खो भगवा सायन्हसमयं पतिसल्लाना वुट्ठितो येनायस्मा महामोग्गल्लानो तेनुपसंकमि। उपसंकमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। निसज्ज खो भगवा आयस्मन्तं महामोग्गल्लानं एतदवोच -

कच्चि ते मोग्गल्लान खमनीयं? कच्चि यापनीयं? कच्चि दुक्खा वेदना पटिक्कमन्ति नो अभिक्कमन्ति ? पटिक्कमोसानं पञ्ञायति नो अभिक्कमोति ?

न मे भन्ते खमनीयं। न यापनीयं। बाल्हा मे दुक्खा वेदना अभिक्कमन्ति नो पटिक्कमन्ति। अभिक्कमोसानं पञ्ञायति नो पटिक्कमोति ।

सत्तिमे मोग्गल्लान बोज्झंगा, मया सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति ।

कतमे सत्त ?

सतिसम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

धम्मविचय सम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति ।

विरियसम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पीतिसम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पस्सद्धिसम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

समाधिसम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

उपेक्खासम्बोज्झंगो खो मोग्गल्लान, मया सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

इमे खो मोग्गल्लान, सत्तबोज्झंगा मया सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति।

तग्घ भगव, बोज्झंगा। तग्घ सुगत, बोज्झंगा'ति।

इदमवोच भगवा । अत्तमनो आयस्मा महामोग्गल्लानो भगवतो भासितं अभिनन्दि । वुट्ठाहि चायस्मा महामोग्गल्लानो तम्हा आबाधा । तथा पहीनो चायस्मतो महामोग्गल्लानस्स सो आबाधो अहोसी'ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

महाचुन्दत्थेर बोज्झंग

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेलुवने कलन्दकनिवापे । तेन खो पन समयेन भगवा आबाधिको होति दुक्खितो बाल्हगिलानो ।

अथ खो आयस्मा महाचुन्दो सायन्हसमयं पतिसल्लाना वुट्ठितो येन भगवा तेनुपसंकमि । उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि । एकमन्तं निसिन्नं खो आयस्मन्तं महाचुन्दं भगवा एतदवोच -

पटिभन्तु तं चुन्द बोज्झंगा'ति ।

सत्तिमे भन्ते बोज्झंगा भगवता सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति ।

कतमे सत्त ?

सतिसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

धम्मविचयसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

विरियसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पीतिसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

पस्सद्धिसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

समाधिसम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

उपेक्खासम्बोज्झंगो खो भन्ते, भगवता सम्मदक्खातो भावितो बहुलीकतो अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति।

इमे खो भन्ते, सत्तबोज्झंगा भगवता सम्मदक्खाता भाविता बहुलीकता अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तन्ति।

तग्घ चुन्द, बोज्झंगा। तग्घ चुन्द, बोज्झंगा'ति।

इदमवोचायस्मा महाचुन्दो। समनुञ्ञो सत्था अहोसि। वुट्ठाहि च भगवा तम्हा आबाधा। तथा पहीनो च भगवतो सो आबाधो अहोसी'ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

गिरिमानन्द सुत्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन आयस्मा गिरिमानन्दो आबाधिको होति दुक्खितो बाल्हगिलानो ।

अथ खो आयस्मा आनन्दो येन भगवा तेनुपसंकमि। उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच ।

आयस्मा भन्ते गिरिमानन्दो आबाधिको होति दुक्खितो बाल्हगिलानो। साधु भन्ते, भगवा येनायस्मा गिरिमानन्दो तेनुपसंकमतु अनुकम्पं उपादायाति ।

सचे खो त्वं आनन्द, गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो उपसंकमित्वा दससञ्ञा भासेय्यासि, ठानं खो पनेतं विज्जति यं गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो दससञ्ञा सुत्वा सो आबाधो ठानसो पटिप्पस्सम्भेय्य ।

कतमा दस ?

अनिच्चसञ्ञा, अनत्तसञ्ञा, असुभसञ्ञा, आदीनवसञ्ञा, पहानसञ्ञा, विरागसञ्ञा, निरोधसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा, सब्बसंखारेसु अनिच्चसञ्ञा, आनापानसति ।

कतमाचानन्द अनिच्चसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा इति पटिसंचिक्खति । 'रूपं अनिच्चं वेदना अनिच्चा सञ्ञा अनिच्चा संखारा अनिच्चा विञ्ञाणं अनिच्चन्ति' । इति इमेसु पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु अनिच्चानुपस्सी विहरति । अयं वुच्चतानन्द अनिच्चसञ्ञा ।

कतमाचानन्द अनत्तसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा इति पटिसंचिक्खति । 'चक्खुं अनत्ता रूपा अनत्ता, सोतं अनत्ता सद्दा अनत्ता, घानं अनत्ता गन्धा अनत्ता, जिव्हा अनत्ता रसा अनत्ता, कायो अनत्ता फोट्ठब्बा अनत्ता, मनो अनत्ता धम्मा अनत्ता'ति । इति इमेसु छसु अज्झत्तिकबाहिरेसु आयतनेसु अनत्तानुपस्सी विहरति । अयं वुच्चतानन्द अनत्तसञ्ञा ।

कतमाचानन्द असुभसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु इममेव कायं उद्धं पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्तं पूरं नानाप्पकारस्स असुचिनो

पच्चवेक्खति । 'अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा दन्ता तचो मंसं नहारु अट्ठि अट्ठिमिञ्जा वक्कं हदयं यकनं किलोमकं पिहकं पप्फासं अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं पित्तं सेम्हं पुब्बो लोहितं सेदो मेदो अस्सु वसा खेलो सिंघाणिका लसिका मुत्तन्ति' । इति इमस्मिं काये असुभानुपस्सी विहरति । अयं वुच्चतानन्द असुभसञ्ञा ।

कतमाचानन्द आदीनवसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा इति पटिसञ्चिक्खति । 'बहु दुक्खो खो अयं कायो बहु आदीनवो । इति इमस्मिं काये विविधा आबाधा उप्पज्जन्ति । सेय्यथीदं, चक्खुरोगो सोतरोगो घानरोगो जिव्हारोगो कायरोगो सीसरोगो कण्णरोगो मुखरोगो दन्तरोगो कासो सासो पिनासो डहो जरो कुच्छिरोगो मुच्छा पक्कन्दिका सूला विसूचिका कुट्ठं गण्डो किलासो सोसो अपमारो दद्दु कण्डु कच्छु रखसा वितच्छिका लोहितपित्तं मधुमेहो अंसा पिळका भगन्दळा । पित्तसमुट्ठाना आबाधा सेम्हसमुट्ठाना आबाधा वातसमुट्ठाना आबाधा सन्निपातिका आबाधा उतुपरिणामजा आबाधा विसमपरिहारजा आबाधा ओपक्कमिका आबाधा कम्मविपाकजा आबाधा सीतं उण्हं जिघच्छा पिपासा उच्चारो पस्सावो'ति । इति इमस्मिं काये आदीनवानुपस्सी विहरति । अयं वुच्चतानन्द आदीनवसञ्ञा ।

कतमाचानन्द पहानसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति। उप्पन्नं व्यापाद वितक्कं नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति। उप्पन्नं विहिंसावितक्कं नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति। उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे नाधिवासेति पजहति विनोदेति ब्यन्तीकरोति अनभावं गमेति। अयं वुच्चतानन्द पहानसञ्ञा।

कतमाचानन्द विरागसञ्ञा?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा इति पटिसञ्चिक्खति। 'एतं सन्तं एतं पणीतं यदिदं सब्बसंखारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो विरागो निब्बानन्ति'। अयं वुच्चतानन्द विरागसञ्ञा।

कतमाचानन्द निरोधसञ्ञा?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा इति पटिसंचिक्खति। 'एतं सन्तं एतं पणीतं यदिदं सब्बसंखारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो निरोधो निब्बानन्ति'। अयं वुच्चतानन्द निरोधसञ्ञा।

कतमाचानन्द सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा?

इधानन्द भिक्खु ये लोके उपयुपादाना चेतसो अधिट्ठानाभिनिवेसानुसया, ते पजहन्तो विरमति न उपादियन्तो।

अयं वुच्चतानन्द सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा।

कतमाचानन्द सब्बसंखारेसु अनिच्चसञ्ञा ?

इधानन्द भिक्खु सब्बसंखारेहि अट्टीयति हरायति जिगुच्छति। अयं वुच्चतानन्द सब्बसंखारेसु अनिच्चसञ्ञा।

कतमाचानन्द आनापानसति ?

इधानन्द भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा निसीदति पल्लंकं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा ।

सो सतो व अस्ससति सतो व पस्ससति। दीघं वा अस्ससन्तो दीघं अस्ससामीति पजानाति। दीघं वा पस्ससन्तो दीघं पस्ससामीति पजानाति। रस्सं वा अस्ससन्तो रस्सं अस्ससामीति पजानाति। रस्सं वा पस्ससन्तो रस्सं पस्ससामीति पजानाति। सब्बकायपटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति। सब्बकाय पटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति। पस्सम्भयं कायसंखारं अस्ससिस्सामीति सिक्खति। पस्सम्भयं कायसंखारं पस्ससिस्सामीति सिक्खति।

पीतिपटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति। पीतिपटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति। सुखपटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति। सुखपटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति। चित्तसंखारपटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति।

चित्तसंखारपटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति । पस्सम्भयं चित्तसंखारं अस्ससिस्सामीति सिक्खति । पस्सम्भयं चित्तंखारं पस्ससिस्सामीति सिक्खति ।

चित्तपटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति । चित्तपटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति । अभिप्पमोदयं चित्तं अस्ससिस्सामीति सिक्खति। अभिप्पमोदयं चित्तं पस्ससिस्सामीति सिक्खति । समादहं चित्तं अस्ससिस्सामीति सिक्खति । समादहं चित्तं पस्ससिस्सामीति सिक्खति । विमोचयं चित्तं अस्ससिस्सामीति सिक्खति । विमोचयं चित्तं पस्ससिस्सामीति सिक्खति ।

अनिच्चानुपस्सी अस्ससिस्सामीति सिक्खति । अनिच्चानुपस्सी पस्ससिस्सामीति सिक्खति । विरागानुपस्सी अस्ससिस्सामीति सिक्खति । विरागानुपस्सी पस्ससिस्सामीति सिक्खति । निरोधानुपस्सी अस्ससिस्सामीति सिक्खति । निरोधानुपस्सी पस्ससिस्सामीति सिक्खति । पटिनिस्सग्गानुपस्सी अस्ससिस्सामीति सिक्खति। पटिनिस्सग्गानुपस्सी पस्ससिस्सामीति सिक्खति। अयं वुच्चतानन्द आनापानसति।

सचे खो त्वं आनन्द, गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो उपसंकमित्वा इमा दस सञ्ञा भासेय्यासि । ठानं खो पनेतं विज्जति यं गिरिमानन्दस्स भिक्खुनो इमा दस सञ्ञा सुत्वा सो आबाधो ठानसो पटिप्पस्सम्भेय्याति।

अथ खो आयस्मा आनन्दो भगवतो सन्तिके इमा दस सञ्ञा उग्गहेत्वा येनायस्मा गिरिमानन्दो तेनुपसंकमि । उपसंकमित्वा आयस्मतो गिरिमानन्दस्स इमा दस सञ्ञा अभासि। अथ खो आयस्मतो गिरिमानन्दस्स इमा दस सञ्ञा सुत्वा सो आबाधो ठानसो पटिप्पस्सम्भि । वुट्ठहिचायस्मा गिरिमानन्दो तम्हा आबाधा । तथा पहीनो च पनायस्मतो गिरिमानन्दस्स सो आबाधो अहोसी'ति ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

मोर परित्तं

उदेतयं चक्खुमा एकराजा
हरिस्सवण्णो पठविप्पभासो
तं तं नमस्सामि हरिस्सवण्णं पठविप्पभासं
तयज्ज गुत्ता विहरेमु दिवसं

ये ब्राह्मणा वेदगू सब्बधम्मे
ते मे नमो ते च मं पालयन्तु
नमत्थु बुद्धानं नमत्थु बोधिया
नमो विमुत्तानं नमो विमुत्तिया

इमं सो परित्तं कत्वा मोरो चरति एसना

अपेतयं चक्खुमा एकराजा
हरिस्सवण्णो पठविप्पभासो
तं तं नमस्सामि हरिस्सवण्णं पठविप्पभासं
तयज्ज गुत्ता विहरेमु रत्तिं

ये ब्राह्मणा वेदगू सब्बधम्मे
ते मे नमो ते च मं पालयन्तु
नमत्थु बुद्धानं नमत्थु बोधिया
नमो विमुत्तानं नमो विमुत्तिया

इमं सो परित्तं कत्वा मोरो वासमकप्पयीति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

चन्द परित्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन चन्दिमा देवपुत्तो राहुना असुरिन्देन गहितो होति। अथ खो चन्दिमा देवपुत्तो भगवन्तं अनुस्सरमानो तायं वेलायं इमं गाथं अभासि।

नमो ते बुद्धवीरत्थु - विप्पमुत्तोसि सब्बधी
सम्बाधपटिपन्नोस्मि - तस्स मे सरणं भवाति

अथ खो भगवा चन्दिमं देवपुत्तं आरब्भ राहुं असुरिन्दं गाथाय अज्झभासि।

तथागतं अरहन्तं - चन्दिमा सरणं गतो
राहु चन्दं पमुञ्चस्सु - बुद्धा लोकानुकम्पकाति

अथ खो राहु असुरिन्दो चन्दिमं देवपुत्तं मुञ्चित्वा तरमानरूपो येन वेपचित्ति असुरिन्दो तेनुपसंकमि। उपसंकमित्वा संविग्गो लोमहट्ठजातो एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठितं खो राहुं असुरिन्दं वेपचित्ति असुरिन्दो गाथाय अज्झभासि ।

किन्नुसन्तरमानोव - राहु चन्दं पमुञ्चसि
संविग्गरूपो आगम्म - किन्नु भीतोव तिट्ठसी'ति

सत्तधा मे फले मुद्धा - जीवन्तो न सुखं लभे
बुद्धगाथाभिगीतोम्हि - नो चे मुञ्चेय्य चन्दिमन्ति

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

सुरिय परित्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सुरियो देवपुत्तो राहुना असुरिन्देन गहितो होति। अथ खो सुरियो देवपुत्तो भगवन्तं अनुस्सरमानो तायं वेलायं इमं गाथं अभासि ।

नमो ते बुद्ध वीरत्थु - विप्पमुत्तोसि सब्बधि
सम्बाधपटिपन्नोस्मि - तस्स मे सरणं भवाति

अथ खो भगवा सुरियं देवपुत्तं आरब्भ राहुं असुरिन्दं गाथाहि अज्झभासि ।

तथागतं अरहन्तं - सुरियो सरणं गतो
राहु सुरियं पमुञ्चस्सु - बुद्धा लोकानुकम्पकाति

यो अन्धकारे तमसी पभंकरो
वेरोचनो मण्डली उग्गतेजो
मा राहु गिली चरमन्तलिक्खे
पजं ममं राहु पमुञ्च सूरियन्ति

अथ खो राहु असुरिन्दो सुरियं देवपुत्तं मुञ्चित्वा तरमानरूपो येन वेपचित्ति असुरिन्दो तेनुपसंकमि । उपसंकमित्वा संविग्गो लोमहट्ठजातो एकमन्तं अट्ठासि । एकमन्तं ठितं खो राहुं असुरिन्दं वेपचित्ति असुरिन्दो गाथाय अज्झभासि ।

किन्नुसन्तरमानोव - राहु सुरियं पमुञ्चसि
संविग्गरूपो आगम्म - किन्नु भीतोव तिट्ठसीति

सत्तधा मे फले मुद्धा - जीवन्तो न सुखं लभे
बुद्धगाथाभिगीतोम्हि - नो चे मुञ्चेय्य सुरियन्ति

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

अट्ठविसती परित्तं

तण्हंकरो महावीरो - मेधंकरो महायसो
सरणंकरो लोकहितो - दीपंकरो जुतिन्धरो

कोण्डञ्ञो जनपामोक्खो - मंगलो पुरिसासभो
सुमनो सुमनो धीरो - रेवतो रतिवद्धनो

सोभितो गुणसम्पन्नो - अनोमदस्सी जनुत्तमो
पदुमो लोकपज्जोतो - नारदो वरसारथी

पदुमुत्तरो सत्तसारो - सुमेधो अग्गपुग्गलो
सुजातो सब्बलोकग्गो - पियदस्सी नरासभो

अत्थदस्सी कारूणिको - धम्मदस्सी तमोनुदो
सिद्धत्थो असमो लोके - तिस्सो वरदसंवरो

फुस्सो वरद सम्बुद्धो - विपस्सी च अनूपमो
सिखी सब्बहितो सत्था - वेस्सभू सुखदायको

ककुसन्धो सत्थवाहो - कोणागमनो रणञ्जहो
कस्सपो सिरिसम्पन्नो - गोतमो सक्यपुंगवो

तेसं सच्चेन सीलेन - खन्तिमेत्तबलेन च
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु - आरोग्येन सुखेन चाति

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ।

आणत्ति परित्तं

ये सन्ता सन्तचित्ता तिसरणसरणा एत्थ लोकन्तरे वा
भूम्मा भूम्मा च देवा गुणगणगहणब्यावटा सब्बकालं
एते आयन्तु देवा वरकनकमये मेरुराजे वसन्तो
सन्तो सन्तोसहेतुं मुनिवरवचनं सोतुमग्गं समग्गं

सब्बेसु चक्कवाळेसु, यक्खा देवा च ब्रह्मुनो,
यं अम्हेहि कतं पुञ्ञं, सब्बसम्पत्तिसाधकं,
सब्बे तं अनुमोदित्वा, समग्गा सासने रता,
पमादरहिता होन्तु, आरक्खासु विसेसतो,

सासनस्स च लोकस्स, वुद्धि भवतु सब्बदा,
सासनम्पि च लोकञ्च, देवा रक्खन्तु सब्बदा,
सद्धिं होन्तु सुखी सब्बे, परिवारेहि अत्तनो,
अनीघा सुमना होन्तु, सह सब्बेहि ञातिभि

राजतो वा चोरतो वा मनुस्सतो वा अमनुस्सतो वा अग्गितो वा उदकतो वा पिसाचतो वा खाणुकतो वा कण्टकतो नक्खत्ततो वा जनपदरोगतो वा असद्धमतो वा असन्दिट्ठितो असप्पुरिसतो वा चण्डहत्थिअस्समिगगोण कुक्कुरअहिविच्छिकमणिसप्पदीपि अच्छतरच्छसुकरमहिसयक्खरक्खसादीहि नानाभयतो वा नानारोगतो वा नानाउपद्दवतो वा आरक्खं गण्हन्तु

पणिधानतो पट्ठाय तथागतस्स दसपारमियो दसउपपारमियो दसपरमत्थपारमियो पञ्चमहापरिच्चागे तिस्सोचरिया पच्छिमभवे गब्भावक्कन्तिं जातिं अभिनिक्खमणं पधानचरियं बोधिपल्लंके मारविजयं सब्बञ्ञुतञाणपटिवेधं नवलोकुत्तरधम्मेति सब्बेपि मे बुद्धगुणे आवज्जित्वा वेसालियं तीसु पाकारन्तरेसु तियामरत्तिं परित्तं करोन्तो आयस्मा आनन्दत्थेरो विय कारुञ्ञचित्तं उपट्ठपेत्वा ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

जय परित्तं

सिरि धिति मति तेजो जयसिद्धि महिद्धि महागुणं अपरिमित पुञ्ञाधिकारस्स सब्बन्तराय निवारण समत्थस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

द्वत्तिंस महा पुरिसलक्खणानुभावेन, असीत्यनुब्यञ्जन लक्खणानुभावेन, अट्ठुत्तरसत मंगल लक्खणानुभावेन, छब्बण्णरंस्यानुभावेन, केतुमालानुभावेन, दसपारमितानुभावेन, दसउपपारमितानुभावेन, दसपरमत्थपारमितानुभावेन, सीलसमाधिपञ्ञानुभावेन, बुद्धानुभावेन, धम्मानुभावेन, संघानुभावेन, तेजानुभावेन, इद्धयानुभावेन, बलानुभावेन, ञेय्यधम्मानुभावेन, चतुरासीतिसहस्स धम्मक्खन्धानुभावेन, नवलोकुत्तरधम्मानुभावेन, अट्ठंगिकमग्गानुभावेन,

अट्ठसमापत्तयानुभावेन, छलभिञ्ञानुभावेन, मेत्ता करुणा मुदिता उपेक्खानुभावेन, सब्बपारमितानुभावेन, रतनत्तय सरणानुभावेन, तुय्हं सब्बरोग सोक उपद्दव, दुक्ख दोमनस्सुपायासा विनस्सन्तु । सब्बसंकप्पा तुय्हं समिज्झन्तु । दीघायुको होतु सतवस्सजीवेन समंगिको होतु सब्बदा ।

आकास पब्बत वन भूमि तटाक गंगा, महासमुद्द आरक्खक देवता सदा तुम्हे अनुरक्खन्तु, सब्बबुद्धानुभावेन, सब्बधम्मानुभावेन, सब्बसंघानुभावेन, बुद्धरतनं धम्मरतनं संघरतनं तिन्नं रत्नानं आनुभावेन, चतुरासीति सहस्सधम्मक्खन्धानुभावेन, पिटकत्तयानुभावेन, जिनसावकानुभावेन, सब्बे ते रोगा, सब्बे ते भया, सब्बे ते अन्तराया, सब्बे ते उपद्दवा, सब्बे ते दुन्निमित्ता, सब्बे ते अवमंगला विनस्सन्तु ।

आयुवड्ढको, धनवड्ढको, सिरिवड्ढको, यसवड्ढको, बलवड्ढको, वण्णवड्ढको, सुखवड्ढको, होतु सब्बदा ।

दुक्खरोगभयावेरा - सोका सब्बे उपद्दवा
अनेका अन्तरायापि - विनस्सन्तु च तेजसा
जय सिद्धि धनं लाभं - सोत्थि भाग्यं सुख बलं
सिरियायु च वण्णो च - भोगंवुद्धि च यसवा
सतवस्सा च आयू च - जीवसिद्धि भवन्तु ते ।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

जिनपञ्जर

जयासनगता वीरा जेत्वा मारं सवाहिणिं
चतुसच्चामतरसं ये पिविंसु नरासभा

तण्हंकरादयो बुद्धा अट्ठवीसति नायका
सब्बे पतिट्ठिता तुय्हं मत्थके ते मुनिस्सरा

सिरे पतिट्ठिता बुद्धा धम्मो च तव लोचने
संघो पतिट्ठितो तुय्हं उरे सब्बगुणाकरो

हदये अनुरूद्धो च सारिपुत्तो च दक्खिणे
कोण्डञ्ञो पिट्ठिभागस्मिं मोग्गल्लानोसि वामके

दक्खिणे सवणे तुय्हं आहुं आनन्दराहुला
कस्सपो च महानामो उभोसुं वामसोतके

केसन्ते पिट्ठिभागस्मिं सुरियो विय पभंकरो
निसिन्नो सिरिसम्पन्नो सोभितो मुनिपुंगवो

कुमारकस्सपो नाम महेसी चित्रवादको
सो तुय्हं वदने निच्चं पतिट्ठासि गुणाकरो

पुण्णो अंगुलिमालो च उपालि नन्दसीवली
थेरा पञ्च इमे जाता ललाटे तिलका तव

सेसासीतिमहाथेरा विजिता जिनसावका
जलन्ता सीलतेजेन अंगमंगेसु सण्ठिता

रतनं पुरतो आसि दक्खिणे मेत्तसुत्तकं
धजग्गं पच्छतो आसि वामे अंगुलिमालकं

खन्धमोरपरित्तञ्च आटानाटियसुत्तकं
आकासच्छदनं आसि सेसा पाकारसञ्ञिता

जिनाणाबल संयुत्ते धम्मपाकारलंकते
वसतो ते चतुकिच्चेन सदा सम्बुद्धपञ्जरे

वातपित्तादिसञ्जाता बाहिरज्झत्तुपद्दवा
असेसा विलयं यन्तु अनन्तगुणतेजसा

जिनपञ्जरमज्झट्ठं विहरन्तं महीतले
सदा पालेन्तु त्वं सब्बे ते महापुरिसा सभा

इच्चेवमच्चन्तकतो सुरक्खो
जिनानुभावेन जितूपपद्दवो
बुद्धानुभावेन हतारिसंघो
चराहि सद्धम्मनुभावपालितो

इच्चेवमच्चन्तकतो सुरक्खो
जिनानुभावेन जितूपपद्दवो
धम्मानुभावेन हतारिसंघो

चराहि सद्धम्मनुभावपालितो

इच्चेवमच्चन्तकतो सुरक्खो
जिनानुभावेन जितूपपद्दवो
संघानुभावेन हतारिसंघो
चराहि सद्धम्मनुभावपालितो

सद्धम्मपाकारपरिक्खितोसि
अट्ठारिया अट्ठदिसासु होन्ति
एत्थन्तरे अट्ठनाथा भवन्ति
उद्धं वितानं व जिना ठिता ते

भिन्दन्तो मारसेनं तव सिरसि ठितो बोधिमारूय्ह सत्था
मोग्गल्लानोसि वामे वसति भुजतटे दक्खिणे सारिपुत्तो
धम्मो मज्झे उरस्मिं विहरति भवतो मोक्खतो मोरयोनिं
सम्पत्तो बोधिसत्तो चरणयुग गतो भानुलोकेकनाथो

सब्बावमंगलमुपद्दवदुन्निमित्तं
सब्बीतिरोगगहदोसमसेसनिन्दा
सब्बन्तराय भयदुस्सुपिनं अकन्तं
बुद्धानुभावपवरेन पयातु नासं

सब्बावमंगलमुपद्दवदुन्निमित्तं
सब्बीतिरोगगहदोसमसेसनिन्दा
सब्बन्तराय भयदुस्सुपिनं अकन्तं
धम्मानुभावपवरेन पयातु नासं

सब्बावमंगलमुपद्दवदुन्निमित्तं
सब्बीतिरोगगहदोसमसेसनिन्दा
सब्बन्तराय भयदुस्सुपिनं अकन्तं
संघानुभावपवरेन पयातु नासं

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

दसदिसा परित्तं

दिसासु दस भागेसु - ठिता बुद्धानुभावतो
वेरादि अन्तरायापि - विनस्सन्ति असेसतो
एवमादि गुणोपेतं - परित्तं तं भणामहे

पदुमुत्तरो पुरत्थिमाय - अग्गिनेचेव रेवतो
दक्खिणे कस्सपो बुद्धो - निरिते च सुमंगलो

पच्छिमे च सिखी बुद्धो - वायब्या मेधंकरो
उत्तरे पियदस्सी च - ईसाने दीपंकरो

पठवियं ककुसन्धो च - आकासे सरणंकरो
एवं दसदिसाचेव - सब्बे बुद्धा पतिट्ठिता
अच्चन्तराया सब्बे ते - सोक रोग भयापि च

विनस्सन्तु सदा तुय्हं - सब्बीरिया पथेसु च
यक्खादि देवताही च - राज चोरारि अग्गिही

अमनुस्सेहि सब्बेहि - तिरच्छानगतेसु च
जाता सब्बे विनस्सन्तु - उपद्दवा असेसतो

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

आरक्षक परित्तं

पठवी बल सुन्दरी - सब्बञ्ञु बोधि मण्डलं
असंखेय्यं मारसेनं - जयो जयतु मंगलं

ककुसन्धो कोणागमणो - कस्सपो गोतमो मुनी
मेत्तेय्यो पञ्चबुद्धा ते - सीसे मेसेन्तु सब्बदा

एतेसं आनुभावेन - यक्खा देवा महिद्धिका
सब्बेपि सुखिना होन्तु - मम मेत्ता सहायका

सम्बुद्धे अट्ठ वीसञ्च - द्वादसञ्च सहस्सके
पञ्च सत सहस्सानि - नमामि सिरसादरं

तेसं धम्मञ्च संघञ्च - सादरेन नमाम्यहं
नमक्कारानुभावेन - सब्बे भया उपद्दवा
अनेका अन्तरायापि - विनस्सन्तु असेसतो

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

जलनन्दन परित्तं

चतुवीसति बुद्धोति - यो भविस्सति उत्तमं
पारमी बलयुत्तेहि - जलनन्दन उत्तमं

अनोमानी जलं तीरे - उत्तमं पत्तचीवरे
पारमी ते जलं होति - सर्वबन्धनछेदनं

आनन्दोति महाथेरं - उत्तमं धम्मभण्डकं
येन भिक्खु महाथेरं - सयने बन्धनविध्वंसनं

इति श्रीलोकबुद्धेहि - येन धम्मानुभावतो
यन्त्रमन्त्रहरं कत्वा - विनासं बुद्धानुभावतो

मुनिन्दो होति नमो बुद्धं - मारसेना पहिज्जति
दसकोटिसहस्सानि - सर्वबन्धनछेदनं

पारमिता गुणा होन्ति - सो भविस्सति उत्तमं
अनेकजातिसंसारं - सहस्सं धम्मानुभावतो

सयानो वा सहस्सानि - उत्तमं गुणपुग्गलं
असीतिं येन सब्बेपि - सब्बसिद्धी भवन्तु ते

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

दसधम्म सुत्तं

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि, भिक्खवो ति। भदन्तेति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच -

''दस इमे भिक्खवे, धम्मा पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बा। कतमे दस ?

'वेवण्णियम्हि अज्झुपगतो'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'परपटिबद्धा मे जीविका'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'अञ्ञो मे आकप्पो करणीयो'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं।

'कच्चिनु खो मे अत्ता सीलतो न उपवदती'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'कच्चिनु खो मं अनुविच्च विञ्ञू सब्रह्मचारी सीलतो न उपवदन्ती'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'सब्बेहि मे पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं । 'कम्मस्सकोम्हि कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मपटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि कल्याणं वा पापकं वा तस्स दायादो भविस्सामी'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं।

'कथं भूतस्स मे रत्तिन्दिवा वीतिपतन्ती'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'कच्चिनु खोहं सुञ्ञागारे अभिरमामी'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ।

'अत्थिनु खो मे उत्तरिमनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसो अधिगतो सोहं पच्छिमे काले सब्रह्मचारीहि पुट्ठो न मंकुभविस्सामी'ति, पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं।

इमे खो भिक्खवे, दस धम्मा पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बा''ति । इदमोवोच भगवा । अत्तमना ते भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति।

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

चतुरारक्खा

बुद्धानुस्सति मेत्ता च - असुभं मरणस्सति
इति इमा चतुरारक्खा - भिक्खु भावेय्य सीलवा

- **बुद्धानुस्सति :-**

अनन्तवित्थार गुणं - गुणतोनुस्सरं मुनिं
भावेय्य बुद्धिमा भिक्खु - बुद्धानुस्सतिमादितो

सवासने किलेसे सो - एको सब्बे निघातिय
अहू सुसुद्धसन्तानो - पूजानञ्च सदारहो

सब्बकालगते धम्मे - सब्बे सम्मा सयं मुनि
सब्बाकारेन बुज्झित्वा - एको सब्बञ्ञुतं गतो

विपस्सनादिविज्जाहि - सीलादिचरणेहि च
सुसमिद्धेहि सम्पन्नो - गगनाघेहि नायको

सम्मा गतो सुभं ठानं - अमोघवचनो च सो
तिविधस्सापि लोकस्स - ञाता निरवसेसतो

अनेकेहि गुणोघेहि - सब्बसत्तुत्तमो अहू
अनेकेहि उपायेहि - नरदम्मे दमेसि च

एको सब्बस्स लोकस्स - सब्बसत्तानुसासको
भाग्यइस्सरियादीनं - गुणानं परमो निधि

पञ्ञास्स सब्बधम्मेसु - करूणा सब्बजन्तुसु
अत्तत्थानं परत्थानं - साधिका गुणजेट्ठिका

दयाय पारमी चित्वा - पञ्ञायत्तानमुद्धरी
उद्धरी सब्बधम्मे च - दयायञ्ञे च उद्धरी

दिस्समानो पि तावस्स - रूपकायो अचिन्तियो
असाधारणञाणड्ढ़े - धम्मकाये कथाव काति

- **मेत्तानुस्सति :-**

अत्तूपमाय सब्बेसं - सत्तानं सुखकामतं
पस्सित्वा कमतो मेत्तं - सब्बसत्तेसु भावये

सुखी भवेय्यं निद्दुक्खो - अहं निच्चं अहं विय
हिता च मे सुखी होन्तु - मज्झट्ठा थच वेरिनो

इमम्हि गामक्खेत्तम्हि - सत्ता होन्तु सुखी सदा
ततो परञ्च रज्जेसु - चक्कवालेसु जन्तुनो

समन्ता चक्कवालेसु - सत्तानन्तेसु पाणिनो
सुखिनो पुग्गला भूता - अत्तभावगता सियुं

तथा इत्थि पुमा चेव - अरिया अनरियापि च
देवा नरा अपायट्ठा - तथा दसदिसासु चाति

- **असुभानुस्सति :-**

अविञ्ञाणसुभनिभं - सविञ्ञाणसुभं इमं
कायं असुभतो पस्सं - असुभं भावये यति

वण्णसण्ठानगन्धेहि - आसयोकासतो तथा
पटिक्कूलानि काये मे - कुणपानि द्विसोलस

पतितम्हापि कुणपा - जेगुच्छं कायनिस्सितं
आधारो हि सुची तस्स - काये तु कुणपे ठितं

मील्हे किमि व कायो'यं - असुचिम्हि समुट्ठितो
अन्तो असुचिसम्पुण्णो - पुण्णवच्चकुटी विय

असुचि सन्दते निच्चं - यथा मेदकथालिका
नानाकिमिकुलावासो - पक्कचन्दनिका विय

गण्डभूतो रोगभूतो - वणभूतो समुस्सयो
अतेकिच्छोतिजेगुच्छो - पभिन्नकुणपूपमोति

- **मरणानुस्सति :-**

पवातदीपतुल्याय - सायुसन्ततियाक्खयं
परूपमाय सम्पस्सं - भावये मरणस्सतिं

महासम्पत्तिसम्पत्ता - यथा सत्ता मता इध
तथा अहं मरिस्सामि - मरणं मम हेस्सति

उप्पत्तिया सहेवेदं - मरणं आगतं सदा
मरणत्थाय ओकासं - वधको विय एसति

ईसकं अनिवत्तन्तं - सततं गमनुस्सुकं
जीवितं उदया अत्थं - सुरयो विय धावति

विज्जुबुब्बुलउस्साव - जलराजिपरिक्खयं
घातकोव रिपू तस्स - सब्बत्थापि अवारियो

सुयसत्थामपुञ्ञिद्धि - बुद्धिवुद्धिजिनद्वयं
घातेसि मरणं खिप्पं - का तु मादिसके कथा

पच्चयानञ्च वेकल्या - बाहिरज्झत्तुपद्दवा
मरामोरं निमेसापि - मरमानो अनुक्खनन्ति

- **संवेगवत्थु अट्ठ :-**

भावेत्वा चतुरारक्खा - आवज्जेय्य अनन्तरं
महासंवेगवत्थूनि - अट्ठ अट्ठितवीरियो

जाति जरा व्याधि चुती अपाया - अतीतअप्पत्तकवट्टदुक्खं
इदानि आहारगवेट्ठि दुक्खं - संवेगवत्थूनि इमानि अट्ठ

पातो च सायमपिचेव इमं विधिं यो
आसेवते सततमत्तहिताभिलासी
पप्पोति सोतिविपुलं हतपारिपन्थो
सेट्ठं सुखं मुनिविसिट्ठमतं सुखेन चाति।

महाजयमंगल गाथा

महाकारुनिको नाथो हिताय सब्बपाणिनं
पूरेत्वा पारमी सब्बा पत्तो सम्बोधिमुत्तमं
एतेन सच्चवज्जेन होतु ते जयमंगलं

जयन्तो बोधिया मूले सक्यानं नन्दिवद्धनो
एवं तुय्हं जयो होतु जयस्सु जयमंगलं

सक्कत्वा बुद्धरतनं ओसधं उत्तमं वरं
हितं देवमनुस्सानं बुद्धतेजेन सोत्थिना
नस्सन्तुपद्दवा सब्बे दुक्खा वूपसमेन्तु ते

सक्कत्वा धम्मरतनं ओसधं उत्तमं वरं
परिळाहूपसमनं धम्मतेजेन सोत्थिना
नस्सन्तुपद्दवा सब्बे भया वूपसमेन्तु ते

सक्कत्वा संघरतनं ओसधं उत्तमं वरं
आहुनेय्यं पाहुनेय्यं संघतेजेन सोत्थिना
नस्सन्तुपद्दवा सब्बे रोगा वूपसमेन्तु ते

यं किंचि रतनं लोके विज्जति विविधा पुथु
रतनं बुद्धसमं नत्थि तस्मा सोत्थि भवन्तु ते

यं किंचि रतनं लोके विज्जति विविधा पुथु
रतनं धम्मसमं नत्थि तस्मा सोत्थि भवन्तु ते

यं किंचि रतनं लोके विज्जति विविधा पुथु
रतनं संघसमं नत्थि तस्मा सोत्थि भवन्तु ते

नत्थि मे सरणं अञ्ञं बुद्धो मे सरणं वरं
एतेन सच्चवज्जेन होतु ते जयमंगलं

नत्थि मे सरणं अञ्ञं धम्मो मे सरणं वरं
एतेन सच्चवज्जेन होतु ते जयमंगलं

नत्थि मे सरणं अञ्ञं संघो मे सरणं वरं
एतेन सच्चवज्जेन होतु ते जयमंगलं

सब्बीतियो विवज्जन्तु - सब्बरोगो विनस्सतु
मा ते भवत्वन्तरायो - सुखी दीघायुको भव

भवतु सब्बमंगलं - रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बबुद्धानुभावेन - सदा सोत्थि भवन्तु ते॥

भवतु सब्बमंगलं - रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बधम्मानुभावेन - सदा सोत्थि भवन्तु ते॥

भवतु सब्बमंगलं - रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बसंघानुभावेन - सदा सोत्थि भवन्तु ते॥

साधु ! साधु !! साधु !!!

मैत्री ध्यान (पालि)

अहं अवेरो होमि, अब्यापज्जो होमि, अनीघो होमि, सुखी अत्तानं परिहरामि

अहं विय मय्हं, आचरि उपज्झाया, माता पितरो, हित सत्ता, मज्झत्तिक सत्ता, वेरी सत्ता, अवेरा होन्तु, अब्यापज्झा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु, दुक्खा मुञ्छन्तु, यथा लद्धसम्पत्तितो, मा विगच्छन्तु, कम्मस्सका,

इमस्मिं विहारे, इमस्मिं गोचरगामे, इमस्मिं नगरे, इमस्मिं जम्बुदीपे, इमस्मिं चक्कवाले, इस्सरजना, सीमट्ठक देवता, सब्बे सत्ता, अवेरा होन्तु, अब्या पज्झा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु, दुक्खा मुञ्छन्तु, यथा लद्धसम्पत्तितो, मा विगच्छन्तु, कम्मस्सका,

पुरत्थिमाय दिसाय, दक्खिनाय दिसाय, पच्छिमाय दिसाय, उत्तराय दिसाय, पुरत्थिमाय अनुदिसाय, दक्खिनाय अनुदिसाय, पच्छिमाय अनुदिसाय, उत्तराय अनुदिसाय, हेट्ठिमाय दिसाय, उपरिमाय दिसाय, सब्बे सत्ता, सब्बे पाणा, सब्बे भूता, सब्बे पुग्गला, सब्बे अत्तभावपरियापन्ना, सब्बा इत्थियो, सब्बे पुरिसा, सब्बे अरिया, सब्बे अनरिया, सब्बे देवा, सब्बे मनुस्सा, सब्बे अमनुस्सा, सब्बे विनिपातिका, अवेरा होन्तु, अब्या पज्झा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु, दुक्खा मुञ्छन्तु, यथा लद्धसम्पत्तितो, मा विगच्छन्तु, कम्मस्सका,

सब्बे सत्ता, सुखिनो भवन्तु
सब्बे सत्ता, सुखिनो भवन्तु
सब्बे सत्ता, सुखिनो भवन्तु।

साधु ! साधु !! साधु !!!

पुण्यानुमोदन

घटिकारो ब्रह्मराजा, इमं पुञ्ञा अनुमोदतु
सक्को देवानमिन्दो, इमं पुञ्ञा अनुमोदतु
विस्सकम्मो देवपुत्तो, इमं पुञ्ञा अनुमोदतु
तावतिंसकायिका देवा, इमं पुञ्ञा अनुमोदन्तु
पुञ्ञं तं अनुमोदित्वा, चिरं रक्खन्तु बुद्ध सासनं ॥

पुरिमं दिसं धतरट्ठो, दक्खिनेन विरूल्हको
पच्छिमेन विरूपक्खो, कुवेरो उत्तरं दिसं
चत्तारो ते महाराजा, इमं पुञ्ञा अनुमोदन्तु
पुञ्ञं तं अनुमोदित्वा, चिरं रक्खन्तु बुद्ध सासनं ॥

इन्दो सोमो वरूणो च - भारद्वाजो पजापती
चन्दनो कामसेट्ठो च - किन्नि घण्डु निघण्डु च

पनादो ओपमञ्ञो च - देवसूतो च मातली
चित्तसेनो च गन्धब्बो - नलोराजा जनेसभो

सातागिरो हेमवतो - पुण्णको करतियो गुलो
सीवको मुचलिन्दो च - वेस्सामित्तो युगन्धरो

गोपालो सुप्पगेधो च - हिरिनेत्ती च मन्दियो
पञ्चालचण्डो आलवको - पज्जुन्नो सुमनो सुमुखो दधीमुखो

मणि माणि चरो दीघो - अथो सेरिस्सको सह
एते सेनापति देवा - इमं पुञ्ञा अनुमोदन्तु
पुञ्ञं तं अनुमोदित्वा - चिरं रक्खन्तु बुद्ध सासनं ॥

आकासट्ठा च भुम्मट्ठा , देवा नागा महिद्धिका
पुञ्ञन्तं अनुमोदित्वा , चिरं रक्खन्तु बुद्ध सासनं

आकासट्ठा च भुम्मट्ठा , देवा नागा महिद्धिका
पुञ्ञन्तं अनुमोदित्वा , चिरं रक्खन्तु बुद्ध देसनं

आकासट्ठा च भुम्मट्ठा , देवा नागा महिद्धिका
पुञ्ञन्तं अनुमोदित्वा , चिरं रक्खन्तु मं परन्ति ॥

इमिना पुञ्ञ कम्मेन, मा मे बाल समागमो
सतं समागमो होतु, याव निब्बान पत्तिया
इदं मे पुञ्ञं आसवक्खया वहं होतु
सब्ब दुक्खा पमुञ्चतु ॥

कायेन वाचा चित्तेन - पमादेन मयाकतं
अच्चयं खम मे भन्ते - भूरिपञ्ञ तथागत

कायेन वाचा चित्तेन - पमादेन मयाकतं
अच्चयं खम मे धम्म - सन्दिट्ठिक अकालिक

कायेन वाचा चित्तेन - पमादेन मयाकतं
अच्चयं खम मे संघ - पुञ्ञक्खेत्तं अनुत्तर ॥

साधु ! साधु !! साधु !!!

त्रिरत्न से क्षमा मांगने का तरीका

अनंत जन्मों-जन्म संसार से इस क्षण तक
उन तथागत अरहंत भगवान बुद्धों को,
पच्चेक भगवान बुद्धों को,
उत्तम श्री सद्धर्म को,
भगवान बुद्ध जी का अग्रश्रावक, महाश्रावक लोगों को,
अष्ट आर्यपुद्गल महासंघरत्न को,
आचार्य-उपाध्याय लोगों को,
सत्पुरूष कल्याण मित्रों को,
माँ-पिता, गुरूजन, बड़े-बुढ़े लोगों को,
स्तुप, बोधिवृक्ष, मूर्तियों को

मेरे शरीर मन वाणी से जाने या अनजाने में
जो भी कष्ट हुआ हो तो,
जो भी गलती हुई हो तो,

बुद्धरत्न से मुझे क्षमा मिल जाये...
धर्मरत्न से मुझे क्षमा मिल जाये...
संघरत्न से मुझे क्षमा मिल जाये...

दुसरी बार भी, मुझे क्षमा मिल जाये...
तीसरी बार भी, मुझे क्षमा मिल जाये...

साधु ! साधु !! साधु !!!

भन्ते जी को वंदना करने की विधि

ओकास वन्दामि भन्ते
भन्ते जी ! मैं वन्दना करता हूँ।

मया कतं पुञ्ञं सामिना अनुमोदितब्बं
मैं जो पुण्य किया हूँ, वो आपको देता हूँ।

सामिना कतं पुञ्ञं मय्हं दातब्बं
आप जो पुण्य किये हैं, वो मुझे दीजिये।

साधु साधु अनुमोदामि
बहुत अच्छा, मैं ग्रहण करता हूँ।

ओकास द्वारत्तयेन कतं सब्बं अच्चयं खमथ मे भन्ते
भन्ते जी ! अगर मेरे तन मन वाणी से जो कुछ गलती हुई हो तो कृपा कर मुझे क्षमा कीजिये।

ओकास खमामि भन्ते
भन्ते जी ! मुझे क्षमा कीजिये।

दुतियम्पि ओकास खमामि भन्ते
भन्ते जी ! दूसरी बार भी, मुझे क्षमा कीजिये।

ततियम्पि ओकास खमामि भन्ते
भन्ते जी ! तीसरी बार भी, मुझे क्षमा कीजिये।

साधु ! साधु !! साधु !!!

महासतिपट्ठान सुत्तं

एवं मे सुतं :/ एकं समयं भगवा/ कुरूसु विहरति कम्मासदम्मं नाम कुरूनं निगमो ।/ तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि,/ भिक्खवो'ति ।/ भदन्ते'ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं ।/ भगवा एतदवोच :/

एकायनो अयं भिक्खवे, मग्गो/ सत्तानं विसुद्धिया/ सोकपरिद्दवानं समतिक्कमाय/ दुक्खदोमनस्सानं अत्थंगमाय/ ञायस्स अधिगमाय/ निब्बानस्स सच्छिकिरियाय,/ यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना ।/ कतमे चत्तारो ?/

इधभिक्खवे,भिक्खु/कायेकायानुपस्सीविहरति/आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/

1. कायानुपस्सना सतिपट्ठानं

- **आनापानपब्बं –**

कथञ्च भिक्खवे भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा/ निसीदति पल्लंकं आभुजित्वा/ उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा।/ सो सतो'व अस्ससति,/ सतो'व पस्ससति ।/ दीघं वा अस्ससन्तो दीघं अस्ससामी'ति पजानाति,/ दीघं वा पस्ससन्तो दीघं पस्ससामी'ति पजानाति ।/ रस्सं वा अस्ससन्तो रस्सं अस्ससामी'ति पजानाति,/ रस्सं वा पस्ससन्तो रस्सं पस्ससामी'ति पजानाति।/ सब्बकायपटिसंवेदी अस्ससिस्सामी'ति सिक्खति,/ सब्बकायपटिसंवेदी पस्ससिस्सामी'ति सिक्खति ।/ पस्सम्भयं कायसंखारं अस्ससिस्सामी'ति सिक्खति,/ पस्सम्भयं कायसंखारं पस्ससिस्सामी'ति सिक्खति ।/

सेय्यथापि भिक्खवे, दक्खो भमकारो वा भमकारन्तेवासी वा/ दीघं वा अञ्छन्तो दीघं अञ्छामी'ति पजानाति,/ रस्सं वा अञ्छन्तो रस्सं अञ्छामी'ति पजानाति ।/ एवमेव खो भिक्खवे, भिक्खु/ दीघं वा अस्ससन्तो दीघं अस्ससामी'ति पजानाति,/ दीघं वा पस्ससन्तो दीघं पस्ससामी'ति पजानाति।/ रस्सं वा अस्ससन्तो रस्सं अस्ससामी'ति पजानाति,/ रस्सं वा पस्ससन्तो रस्सं पस्ससामी'ति पजानाति।/ सब्बकायपटिसंवेदी अस्ससिस्सामी'ति सिक्खति,/ सब्बकायपटिसंवेदी पस्ससिस्सामी'ति सिक्खति,/ पस्सम्भयं कायसंखारं अस्ससिस्सामी'ति सिक्खति,/ पस्सम्भयं कायसंखारं पस्ससिस्सामी'ति सिक्खति । /

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये

कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

- **इरियापथपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ गच्छन्तो वा गच्छामी'ति पजानाति,/ ठितो वा ठितोम्ही'ति पजानाति,/ निसिन्नो वा निसिन्नोम्ही'ति पजानाति,/ सयानो वा सयानोम्ही'ति पजानाति,/ यथा यथा वा पनस्स कायो पणिहितो होति,/ तथा तथा नं पजानाति।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

• **सम्पजानपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ अभिक्कन्ते पटिक्कन्ते सम्पजानकारी होति ।/ आलोकिते विलोकिते सम्पजानकारी होति ।/ सम्मिञ्जिते पसारिते सम्पजानकारी होति ।/ संघाटिपत्तचीवरधारणे सम्पजानकारी होति ।/ असिते पीते खायिते सायिते सम्पजानकारी होति ।/ उच्चारपस्सावकम्मे सम्पजानकारी होति ।/ गते ठिते निसिन्ने सुत्ते जागरिते भासिते तुण्हीभावे सम्पजानकारी होति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

• **पटिकूलमनसिकारपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ इममेव कायं उद्धं पादतला अधो केसमत्थका/ तचपरियन्तं पूरं नानप्पकारस्स असुचिनो पच्चवेक्खति/ 'अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा दन्ता तचो/

मंसं न्हारु अट्ठि अट्ठिमिञ्जा वक्कं/ हदयं यकनं किलोमकं पिहकं पप्फासं/ अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं मत्थलुंगं/ पित्तं सेम्हं पुब्बो लोहितं/ सेदो मेदो अस्सु वसा खेळो/ सिंघाणिका लसिका मुत्तन्ति ।/

सेय्यथापि भिक्खवे, उभतोमुखा मुतोळि/ पूरा नानाविहितस्स धञ्ञस्स/ सेय्यथिदं;/ सालीनं वीहीनं मुग्गानं मासानं तिलानं तण्डुलानं ।/ तमेनं चक्खुमा पुरिसो मुञ्चित्वा पच्चवेक्खेय्य,/ इमे साली, इमे वीही, इमे मुग्गा, इमे मासा,/ इमे तिला, इमे तण्डुला'ति ।/ एवमेव खो भिक्खवे, भिक्खु/ इममेव कायं उद्धं पादतला अधो केसमत्थका/ तचपरियन्तं पूरं नानप्पकारस्स असुचिनो पच्चवेक्खति/ अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा दन्ता तचो/ मंसं न्हारु अट्ठि अट्ठिमिञ्जा वक्कं/ हदयं यकनं किलोमकं पिहकं पप्फासं/ अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं मत्थलुंगं/ पित्तं सेम्हं पुब्बो लोहितं/ सेदो मेदो अस्सु वसा खेळो/ सिंघाणिका लसिका मुत्तन्ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

• **धातुमनसिकारपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं/ धातुसो पच्चवेक्खति ।/ अत्थि इमस्मिं काये/ पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातू'ति ।/ सेय्यथापि भिक्खवे, दक्खो गोघातको वा गोघातकन्तेवासी वा/ गाविं वधित्वा चातुम्महापथे बिलसो पटिविभजित्वा निसिन्नो अस्स, /एवमेव खो भिक्खवे, भिक्खु/ इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं/धातुसो पच्चवेक्खति/ अत्थि इमस्मिं काये पठवीधातु/ आपोधातु तेजोधातु वायोधातू'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

• **नवसिवथिकपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ एकाहमतं वा द्वीहमतं वा तीहमतं वा/

उद्धुमातकं विनीलकं विपुब्बकजातं।/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ काकेहि वा खज्जमानं कुललेहि वा खज्जमानं/ गिज्झेहि वा खज्जमानं सुनखेहि वा खज्जमानं / सिंगालेहि वा खज्जमानं विविधेहि वा पाणकजातेहि खज्जमानं,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति।/ अत्थि कायो'ति

वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकसंखलिकं समंसलोहितं नहारुसम्बन्धं,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकसंखलिकं निम्मंसलोहितमक्खितं नहारुसम्बन्धं,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकसंखलिकं अपगतमंसलोहितं नहारुसम्बन्धं,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकानि अपगतसम्बन्धानि/ दिसाविदिसासु विक्खित्तानि/ अञ्ञेन हत्थट्ठिकं अञ्ञेन पादट्ठिकं/अञ्ञेन जंघट्ठिकं अञ्ञेन ऊरट्ठिकं/ अञ्ञेन पिट्ठिट्ठिकं अञ्ञेन कटट्ठिकं/ अञ्ञेन गीवट्ठिकं अञ्ञेन दन्तट्ठिकं/ अञ्ञेन सीसकटाहं।/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'तिवा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकानि सेतानि संखवण्णुपनिभानि,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये

कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकानि पुञ्जिकतानि तेरोवस्सिकानि,/ सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवम्भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं,/ अट्ठिकानि पूतीनि चुण्णकजातानि,/

सो इममेव कायं उपसंहरति/ 'अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवं भावी एतं अनतीतो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरति ।/ अत्थि कायो'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ काये कायानुपस्सी विहरति ।/

(कायानुपस्सना निट्ठिता)

2. वेदनानुपस्सना सतिपट्ठानं

कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ सुखं वेदनं वेदियमानो,/ सुखं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ दुक्खं वा वेदनं वेदियमानो,/ दुक्खं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ अदुक्खमसुखं वा वेदनं वेदियमानो,/ अदुक्खमसुखं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ सामिसं वा सुखं वेदनं वेदियमानो,/ सामिसं सुखं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ निरामिसं वा सुखं वेदनं वेदियमानो,/ निरामिसं सुखं वेदनं

वेदियामी'ति पजानाति ।/ सामिसं वा दुक्खं वेदनं वेदियमानो,/ सामिसं दुक्खं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ निरामिसं वा दुक्खं वेदनं वेदियमानो,/ निरामिसं दुक्खं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ सामिसं वा अदुक्खमसुखं वेदनं वेदियमानो,/ सामिसं अदुक्खमसुखं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/ निरामिसं वा अदुक्खमसुखं वेदनं वेदियमानो,/ निरामिसं अदुक्खमसुखं वेदनं वेदियामी'ति पजानाति ।/

इति अज्झत्तं वा वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति ।/ अत्थि वेदना'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय / अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ।/

(वेदनानुपस्सना निट्ठिता)

3. चित्तानुपस्सना सतिपट्ठानं

कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ सरागं वा चित्तं सरागं चित्तन्ति पजानाति ।/ वीतरागं वा चित्तं वीतरागं चित्तन्ति पजानाति ।/

सदोसं वा चित्तं सदोसं चित्तन्ति पजानाति ।/ वीतदोसं वा चित्तं वीतदोसं चित्तन्ति पजानाति ।/ समोहं वा चित्तं समोहं चित्तन्ति पजानाति ।/ वीतमोहं वा चित्तं वीतमोहं चित्तन्ति पजानाति ।/ संखित्तं वा चित्तं संखित्तं चित्तन्ति पजानाति ।/ विक्खित्तं वा चित्तं विक्खित्तं चित्तन्ति पजानाति ।/ महग्गतं वा चित्तं महग्गतं चित्तन्ति पजानाति,/ अमहग्गतं वा चित्तं अमहग्गतं चित्तन्ति पजानाति ।/ सउत्तरं वा चित्तं सउत्तरं चित्तन्ति पजानाति ।/ अनुत्तरं वा चित्तं अनुत्तरं चित्तन्ति पजानाति ।/ समाहितं वा चित्तं समाहितं चित्तन्ति पजानाति ।/ असमाहितं वा चित्तं असमाहितं चित्तन्ति पजानाति ।/ विमुत्तं वा चित्तं विमुत्तं चित्त'न्ति पजानाति ।/ अविमुत्तं वा चित्तं अविमुत्तं चित्तन्ति पजानाति ।/

इति अज्झत्तं वा चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति ।/ अत्थि चित्त'न्ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति ।/

(चित्तानुपस्सना निट्ठिता)

4. धम्मानुपस्सना सतिपट्ठानं

- **नीवरणपब्बं –**

कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ।/ कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ सन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं कामच्छन्दो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं कामच्छन्दो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स कामच्छन्दस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स कामच्छन्दस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स कामच्छन्दस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं व्यापादं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं व्यापादो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं व्यापादं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं व्यापादो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स व्यापादस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स व्यापादस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स व्यापादस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं थीनमिद्धं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं थीनमिद्ध'न्ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं थीनमिद्धं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं थीनमिद्ध'न्ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स थीनमिद्धस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स थीनमिद्धस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स थीनमिद्धस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं उद्धच्चकुक्कुच्चं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं उद्धच्चकुक्कुच्च'न्ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं उद्धच्चकुक्कुच्चं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं उद्धच्चकुक्कुच्च'न्ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स उद्धच्चकुक्कुच्चस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स उद्धच्चकुक्कुच्चस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं विचिकिच्छं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं विचिकिच्छा'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं विचिकिच्छं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं विचिकिच्छा'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नाय विचिकिच्छाय उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नाय विचिकिच्छाय पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनाय विचिकिच्छाय आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

इति अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/

बहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय ।/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ।/

- **खन्धपब्बं -**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु ।/ कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ 'इति रूपं, इति रूपस्स समुदयो,/ इति रूपस्स अत्थंगमो ।/ इति वेदना, इति वेदनाय समुदयो,/ इति वेदनाय अत्थंगमो ।/ इति सञ्ञा, इति सञ्ञाय समुदयो,/ इति सञ्ञाय अत्थंगमो ।/ इति संखारा, इति संखारानं समुदयो,/ इति संखारानं अत्थंगमो ।/ इति विञ्ञाणं, इति विञ्ञाणस्स समुदयो,/ इति विञ्ञाणस्स अत्थंगमो'ति ।/

इति अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी

वा धम्मेसु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय ।/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ।/

- **आयतनपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ छसु अज्झत्तिकबाहिरेसु आयतनेसु ।/ कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ छसु अज्झत्तिकबाहिरेसु आयतनेसु ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ चक्खुञ्च पजानाति ।/ रूपे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सोतं च पजानाति ।/ सद्दे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च

पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

घानञ्च पजानाति ।/ गन्धे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

जिव्हञ्च पजानाति ।/ रसे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

कायञ्च पजानाति ।/ फोट्ठब्बे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

मनञ्च पजानाति ।/ धम्मे च पजानाति ।/ यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स संयोजनस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स संयोजनस्स पहानं होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च पहीनस्स संयोजनस्स आयतिं अनुप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/

इति अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय ।/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ।/

- **बोज्झंगपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति,/ सत्तेसु बोज्झंगेसु ।/ कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति,/ सत्तेसु बोज्झंगेसु ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ सन्तं वा अज्झत्तं सतिसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं सतिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं सतिसम्बोज्झगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं सतिसम्बोज्झगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स सतिसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स सतिसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं धम्मविचयसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं धम्मविचयसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं

वा अज्झत्तं धम्मविचयसम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं धम्मविचयसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स धम्मविचयसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स धम्मविचयसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति, / तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं विरियसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं विरियसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं विरियसम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं विरियसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स विरियसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स विरियसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं पीतिसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं पीतिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं पीतिसम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं पीतिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स पीतिसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स पीतिसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स पस्सद्धिसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स

पस्सद्धिसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं समाधिसम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं समाधिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं समाधिसम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं समाधिसम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स समाधिसम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स समाधिसम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

सन्तं वा अज्झत्तं उपेक्खासम्बोज्झंगं/ 'अत्थि मे अज्झत्तं उपेक्खासम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ असन्तं वा अज्झत्तं उपेक्खासम्बोज्झंगं/ 'नत्थि मे अज्झत्तं उपेक्खासम्बोज्झंगो'ति पजानाति ।/ यथा च अनुप्पन्नस्स उपेक्खासम्बोज्झंगस्स उप्पादो होति,/ तञ्च पजानाति ।/ यथा च उप्पन्नस्स उपेक्खासम्बोज्झंगस्स भावनाय पारिपूरी होति,/ तञ्च पजानाति ।/

इति अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय ।/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ पञ्चसु नीवरणेसु ।/

- **सच्चपब्बं –**

पुन च परं भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ चतुसु अरियसच्चेसु ।/ कथञ्च भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ चतुसु अरियसच्चेसु ?/

इध भिक्खवे, भिक्खु/ इदं दुक्खन्ति, यथाभूतं पजानाति ।/ अयं दुक्खसमुदयो'ति, यथाभूतं पजानाति ।/ अयं दुक्खनिरोधो'ति, यथाभूतं पजानाति ।/ अयं दुक्खनिरोधगामिनीपटिपदा'ति, यथाभूतं पजानाति ।/

कतमञ्च भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं ?/ जाति'पि दुक्खा, जरा'पि दुक्खा,/ व्याधि'पि दुक्खो, मरण'म्पि दुक्खं,/ सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा'पि दुक्खा,/ अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो,/ पियेहि विप्पयोगो दुक्खो,/ यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं, / संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धा'पि दुक्खा ।/

कतमा च भिक्खवे, जाति ?/ या तेसं तेसं सत्तानं तम्हि तम्हि सत्तनिकाये/ जाति सञ्जाति ओक्कन्ति अभिनिब्बत्ति/ खन्धानं पातुभावो आयतनानं पटिलाभो,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, जाति ।/

कतमा च भिक्खवे, जरा ?/ या तेसं तेसं सत्तानं तम्हि तम्हि सत्तनिकाये/ जरा जीरणता खण्डिच्चं पालिच्चं वलित्तचता/ आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, जरा ।/

कतमञ्च भिक्खवे, मरणं ?/ यं तेसं तेसं सत्तानं तम्हा तम्हा सत्तनिकाया/ चुति चवनता भेदो अन्तरधानं मच्चुमरणं कालकिरिया/ खन्धानं भेदो कळेबरस्स निक्खेपो/ जीवितिन्द्रियस्सुपच्छेदो,/ इदं वुच्चति भिक्खवे, मरणं ।/

कतमो च भिक्खवे, सोको ?/ यो खो भिक्खवे, अञ्ञतरञ्ञतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स/ अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स/ सोको सोचना सोचितत्तं/ अन्तोसोको अन्तोपरिसोको,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सोको ।/

कतमो च भिक्खवे, परिदेवो ?/ यो खो भिक्खवे, अञ्ञतरञ्ञतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स/ अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स/ आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना/ आदेवितत्तं परिदेवितत्तं,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, परिदेवो ।/

कतमञ्च भिक्खवे, दुक्खं ?/ यं खो भिक्खवे, कायिकं दुक्खं कायिकं असातं/ कायसम्फस्सजं दुक्खं असातं वेदयितं,/ इदं वुच्चति भिक्खवे, दुक्खं ।/

कतमञ्च भिक्खवे, दोमनस्सं ?/ यं खो भिक्खवे, चेतसिकं दुक्खं चेतसिकं असातं/ मनोसम्फस्सजं दुक्खं असातं वेदयितं,/ इदं वुच्चति भिक्खवे, दोमनस्सं ।/

कतमो च भिक्खवे, उपायासो ?/ यो खो भिक्खवे, अञ्ञतरञ्ञतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स/ अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स/ आयासो उपायासो आयासितत्तं

उपायासितत्तं,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, उपायासो ।/

कतमो च भिक्खवे, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो ?/ इध यस्स ते होन्ति अनिट्ठा अकन्ता अमनापा/ रूपा सद्दा गन्धा रसा फोट्ठब्बा धम्मा,/ ये वा पनस्स ते होन्ति/ अनत्थकामा अहितकामा अफासुककामा अयोगक्खेमकामा,/ या तेहि सद्धिं संगति समागमो समोधानं मिस्सीभावो,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो ।/

कतमो च भिक्खवे, पियेहि विप्पयोगो दुक्खो ?/ इध यस्स ते होन्ति इट्ठा कन्ता मनापा/ रूपा सद्दा गन्धा रसा फोट्ठब्बा धम्मा,/ ये वा पनस्स ते होन्ति/ अत्थकामा हितकामा फासुककामा योगक्खेमकामा/ माता वा पिता वा भाता वा भगिनी वा/ जेट्ठा वा कनिट्ठा वा मित्ता वा अमच्चा वा ञातिसालोहिता वा,/ या तेहि सद्धिं असंगति असमागमो असमोधानं अमिस्सीभावो,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, पियेहि विप्पयोगो दुक्खो ।/

कतमञ्च भिक्खवे, यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ?/ जातिधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न जातिधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो जाति आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

जराधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न जराधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो जरा आगच्छेय्या'ति ।/

न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

ब्याधिधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न ब्याधिधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो ब्याधि आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

मरणधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न मरणधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो मरणं आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

सोकधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न सोकधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो सोको आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

परिदेवधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/'अहो वत मयं न परिदेवधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो परिदेवो आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

दुक्खधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न दुक्खधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो दुक्खं

आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

दोमनस्सधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न दोमनस्सधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो दोमनस्सं आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

उपायासधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जति/ 'अहो वत मयं न उपायासधम्मा अस्साम ।/ न च वत नो उपायासो आगच्छेय्या'ति ।/ न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं ।/ इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं ।/

कतमे च भिक्खवे, संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धा दुक्खा ?/ सेय्यथीदं;/ रूपूपादानक्खन्धो, वेदनूपादानक्खन्धो,/ सञ्ञूपादानक्खन्धो, संखारुपादानक्खन्धो,/ विञ्ञाणूपादानक्खन्धो ।/ इमे वुच्चन्ति भिक्खवे, संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धा'पि दुक्खा ।/ इदं वुच्चति भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं ।/

- **समुदयसच्चनिद्देसो –**

कतमञ्च भिक्खवे, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं ?/ यायं तण्हा पोनोभविका नन्दिरागसहगता/ तत्रतत्राभिनन्दिनी,/ सेय्यथीदं;/ कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा ।/

सा खो पनेसा भिक्खवे, तण्हा/ कत्थ उप्पज्जमाना उप्पज्जति,/ कत्थ निविसमाना निविसति ?/ यं लोके पियरूपं सातरूपं,/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति,/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

किञ्च लोके पियरूपं सातरूपं ?/

चक्खुं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सोतं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ घानं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ जिव्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ कायो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ मनो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ रसा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा

उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ फोट्ठब्बा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

चक्खुविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सोतविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ घानविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ जिव्हाविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ कायविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ मनोविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

चक्खुसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सोतसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ घानसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति । जिव्हासम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/

एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ कायसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ मनोसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

चक्खुसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सोतसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ घानसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ जिव्हासम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ कायसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ मनोसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ

निविसमाना निविसति ।/ रससञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ फोट्ठब्बसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ रससञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ फोट्ठब्बसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ रसतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/

एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ फोट्ठब्बतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ रसवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ फोट्ठब्बवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

रूपविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ सद्दविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ गन्धविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ रसविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना

निविसति ।/ फोट्ठब्बविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/ धम्मविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति ।/ एत्थ निविसमाना निविसति ।/

इदं वुच्चति भिक्खवे, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं ।/

- **निरोधसच्चनिद्देसो –**

कतमञ्च भिक्खवे, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं ?/ यो तस्सायेव तण्हाय असेसविरागनिरोधो/ चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो ।/ सा खो पनेसा भिक्खवे, तण्हा/ कत्थ पहीयमाना पहीयति,/ कत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ?/ यं लोके पियरूपं सातरूपं,/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

किञ्च लोके पियरूपं सातरूपं ?/

चक्खुं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सोतं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ घानं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ जिव्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ कायो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/

एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ मनो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

रूपा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ रसा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/धम्मा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

चक्खुविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सोतविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ घानविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ जिव्हाविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ कायविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ मनोविञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

चक्खुसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सोतसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ घानसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति।/ जिव्हासम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ कायसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ मनोसम्फस्सो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

चक्खुसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सोतसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ घानसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति।/ जिव्हासम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ कायसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ मनोसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति।/

रूपसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ रससञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ धम्मसञ्ञा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

रूपसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ रससञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ धम्मसञ्चेतना लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

रूपतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ रसतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ धम्मतण्हा लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

रूपवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ रसवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ धम्मवितक्को लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/

रूपविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ सद्दविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ गन्धविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/रसविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ फोट्ठब्बविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ धम्मविचारो लोके पियरूपं सातरूपं ।/ एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति ।/ एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ।/ इदं वुच्चति भिक्खवे, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं ।/

- **मग्गसच्चनिद्देसो –**

कतमञ्च भिक्खवे, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं ?/ अयमेवअरियो अट्ठंगिको मग्गो/ सेय्यथिदं;/ सम्मादिट्ठि सम्मासंकप्पो सम्मावाचा सम्माकम्मन्तो/ सम्माआजीवो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि ।/

कतमा च भिक्खवे, सम्मादिट्ठि ?/ यं खो भिक्खवे, दुक्खे ञाणं, दुक्खसमुदये ञाणं,/ दुक्खनिरोधे ञाणं, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय ञाणं,/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मादिट्ठि ।/

कतमो च भिक्खवे, सम्मासंकप्पो ?/ नेक्खम्मसंकप्पो अव्यापादसंकप्पो अविहिंसासंकप्पो ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मासंकप्पो ।/

कतमा च भिक्खवे, सम्मावाचा ?/ मुसावादा वेरमणी, पिसुनाय वाचाय वेरमणी,/ फरुसाय वाचाय वेरमणी, सम्फप्पलापा वेरमणी ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मावाचा ।/

कतमो च भिक्खवे, सम्माकम्मन्तो ?/ पाणातिपाता वेरमणी, अदिन्नादाना वेरमणी,/ कामेसुमिच्छाचारा वेरमणी ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्माकम्मन्तो ।/

कतमो च भिक्खवे, सम्मा आजीवो ?/ इध भिक्खवे, अरियसावको मिच्छा आजीवं पहाय/ सम्मा आजीवेन जीविकं कप्पेति ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्माआजीवो ।/

कतमो च भिक्खवे, सम्मावायामो ?/ इध भिक्खवे, भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय/ छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति,/ चित्तं पग्गण्हाति, पदहति ।/

उप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं पहानाय/ छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति,/ चित्तं पग्गण्हाति, पदहति ।/

अनुप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं उप्पादाय/ छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति,/ चित्तं पग्गण्हाति, पदहति ।/

उप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं ठितिया/ असम्मोसाय भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया/ छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति,/ चित्तं पग्गण्हाति, पदहति ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मावायामो ।/

कतमा च भिक्खवे, सम्मासति ?/ इध भिक्खवे, भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ आतापी सम्पजानो सतिमा/ विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मासति ।/

कतमो च भिक्खवे, सम्मा समाधि ?/ इध भिक्खवे, भिक्खु विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि/ सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं/ पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।/

वितक्कविचारानं वूपसमा/ अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं/ अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं/ दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।/

पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति ।/ सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति ।/ यन्तं अरिया

आचिक्खन्ति,/ 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी'ति,/ तं ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।/

सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना/ पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थंगमा/ अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं/ चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति ।/ अयं वुच्चति भिक्खवे, सम्मासमाधि ।/ इदं वुच्चति भिक्खवे, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं ।/

इति अज्झत्तं वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ बहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ अज्झत्तबहिद्धा वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति ।/ समुदयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ वयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ समुदयवयधम्मानुपस्सी वा धम्मेसु विहरति ।/ अत्थि धम्मा'ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति/ यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सतिमत्ताय/ अनिस्सितो च विहरति ।/ न च किञ्चि लोके उपादियति ।/ एवम्पि खो भिक्खवे, भिक्खु/ धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति/ चतुसु अरियसच्चेसु ।/

(धम्मानुपस्सना निट्ठिता)

यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य सत्त वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, सत्त वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य छ वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, छ वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य पञ्च वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, पञ्च वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य चत्तारि वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, चत्तारि वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य तीणि वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, तीणि वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य द्वे वस्सानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, द्वे वस्सानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य एकं वस्सं,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, एकं वस्सं ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य सत्त मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, सत्त मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य छ मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, छ मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य पञ्च मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, पञ्च मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य चत्तारि मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, चत्तारि मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य तीणि मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, तीणि मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य द्वे मासानि,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, द्वे मासानि ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य मासो, तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, मासो ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य अड्ढ़ मासो,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।/

तिट्ठन्तु भिक्खवे, अड्ढ़ मासो ।/ यो हि कोचि भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने/ एवं भावेय्य सत्ताहं,/ तस्स द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकंखं/ दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता'ति ।/

एकायनो अयं भिक्खवे, मग्गो/ सत्तानं विसुद्धिया,/ सोकपरिद्दवानं समतिक्कमाय/ दुक्खदोमनस्सानं अत्थंगमाय/ ञायस्स अधिगमाय/ निब्बानस्स सच्छिकिरियाय,/ यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना'ति,/ इति यन्तं वुत्तं इदमेतं पटिच्च वुत्तन्ति ।/

इदमवोच भगवा ।/ अत्तमना ते भिक्खू/ भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति ।/

एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु !

चार प्रत्यवेक्षणा

- **चीवर प्रत्यवेक्षणा –**

पटिसंखायोनिसो चीवरं पटिसेवामी । यावदेव सीतस्स पटिघाताय । उण्हस्स पटिघाताय । डंस मकस वातातप सिरिंसप सम्फस्सानं पटिघाताय । यावदेव हिरि कोपीन पटिच्छादनत्थं ।

- **पिण्डपात प्रत्यवेक्षणा –**

पटिसंखायोनिसो पिण्डपातं पटिसेवामी । नेव दवाय, न मदाय, न मण्डनाय, न विभूषनाय, यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया यापनाय, विहिंसूपरतिया ब्रह्मचरियानुग्गहाय । इति पुरानञ्च वेदनं पटिहंखामि । नवञ्च वेदनं न उप्पादेस्सामि । यात्रा च मे भविस्सति अनवज्जता च फासु विहारो चाति ।

- **शयनासन प्रत्यवेक्षणा –**

पटिसंखायोनिसो सेनासनं पटिसेवामी । यावदेव सीतस्स पटिघाताय । उण्हस्स पटिघाताय । डंस मकस वातातप सिरिंसप सम्फस्सानं पटिघाताय । यावदेव उतुपरिस्सयविनोदनं पटिसल्लानारामत्थं ।

- **गिलानप्रत्यय प्रत्यवेक्षणा –**

पटिसंखायोनिसो गिलानपच्चय भेसज्ज परिक्खारं पटिसेवामी । यावदेव उप्पण्णानं वेय्याबाधिकानं वेदनानं पटिघाताय अब्यापज्जपरमतायाति ।

जयमंगल गाथा

बाहुं सहस्समभिनिम्मितसायुधं तं
गिरिमेखलं उदितघोर ससेनमारं
दानादिधम्मविधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

मारातिरेकमभियुज्झितसब्बरत्तिं
घोरम्पनाळवकमक्खमथद्धयक्खं
खन्तीसुदन्तविधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

नालागिरिं गजवरं अतिमत्तभूतं
दावग्गिचक्कमसनीव सुदारुणं तं
मेत्तम्बुसेकविधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

उक्खित्तखग्गमतिहत्थसुदारुणं तं
धावं तियोजनपथंगुलिमालवं तं
इद्धीभिसंखतमनो जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

कत्वान कट्ठमुदरं इव गब्भिनीया
चिञ्चाय दुट्ठवचनं जनकायमज्झे
सन्तेन सोमविधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

सच्चं विहाय मतिसच्चकवादकेतुं
वादाभिरोपितमनं अतिअन्धभूतं
पञ्ञापदीपजलितो जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

नन्दोपनन्दभुजगं विबुधं महिद्धिं
पुत्तेन थेरभुजगेन दमापयन्तो
इद्धूपदेसविधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

दुग्गाहदिट्ठिभुजगेन सुदट्ठहत्थं
ब्रह्मं विसुद्धिजुतिमिद्धिबकाभिधानं
ञाणागदेन विधिना जितवा मुनिन्दो
तं तेजसा भवतु ते जयमंगलानि

एतापि बुद्धजयमंगल अट्ठगाथा
यो वाचको दिनदिने सरते मतन्दि
हित्वान नेकविविधानि चुपद्दवानि
मोक्खं सुखं अधिगमेय्य नरो सपञ्ञो

साधु ! साधु !! साधु !!!

छत्त माणवक गाथा

यो वदतं पवरो मनुजेसु
सक्यमुनी भगवा कतकिच्चो
पारगतो बलविरिय समंगी
तं सुगतं सरणत्थमुपेमि।

राग विराग मनेज मसोकं
धम्ममसंखत मप्पटिकूलं
मधुरमिमं पगुणं सुविभत्तं
धम्ममिमं सरणत्थमुपेमि।

यत्थ च दिन्न महप्फलमाहु
चतुसु सुचीसु पुरिसयुगेसु
अट्ठ च पुग्गल धम्मदसाते
संघमिमं सरणत्थमुपेमि॥

साधु ! साधु !! साधु !!!

नरसीह गाथा

चक्कवरंकित रत्त सुपादो
लक्खण मण्डित आयतपण्ही
चामर छत्त विभूसित पादो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

सक्य कुमार वरो सुखुमालो
लक्खण चित्तित पुण्ण सरीरो
लोकहिताय गतो नरवीरो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

पुण्ण ससंख निभो मुखवण्णो
देवनरान पियो नरनागो
मत्त गजिन्द विलासित गामी
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

खत्तिय सम्भव अग्गकुलीनो
देवमनुस्स नमस्सित पादो
सील समाधि पतिट्ठित चित्तो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

आयत तुंग सुसण्ठित नासो
गोपखुमो अभिनील सुनेत्तो

इन्द धनू अभिनील भमूको
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

वट्ट सुमट्ट सुसण्ठित गीवो
सीहहनू मिगराज सरीरो
कञ्चन सुच्छवि उत्तम वण्णो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

सिनिद्ध सुगम्भिर मञ्जुसुघोसो
हिंगुल बद्ध सुरत्त सुजिव्हो
वीसति वीसति सेत सुदन्तो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

अञ्जन वण्ण सुनील सुकेसो
कञ्चन पट्ट विसुद्ध ललाटो
ओसधि पण्डर सुद्ध सुउण्णो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

गच्छति नीलपथे विय चन्दो
तारगणा परिवेठित रूपो
सावक मज्झगतो समणिन्दो
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो

साधु ! साधु !! साधु !!!

वन्दे.. वन्दे.. भगवन्तं..

01. वन्दे अरहं भगवन्तं
02. वन्दे सम्बुद्धमुत्तमं
03. वन्दे विज्जाचरणवीरं
04. वन्दे सुगतनायकं
05. वन्दे लोकविदुं नाथं
06. वन्दे अनुत्तरं मुनिं
07. वन्दे मग्गदस्सावि
08. वन्दे सारथिनायकं
09. वन्दे देवमनुस्सानं
10. वन्दे बुद्धमहामुनिं
11. वन्दे विजितसंगामं
12. वन्दे सुगतसारथिं
13. वन्दे पारगतं बुद्धं
14. वन्दे तथागतं वरं
15. वन्दे लोकन्तदस्सावि
16. वन्दे सरणमुत्तमं
17. वन्दे इन्द्रियसम्पन्नं
18. वन्दे निब्बुतं सिवं
19. वन्दे नरासभं बुद्धं
20. वन्दे सम्बुद्धनायकं
21. वन्दे पुरिन्ददं सेट्ठं
22. वन्दे सक्यमुनिं वरं

23. वन्दे धम्मधजंकेतुं
24. वन्दे अमतदायकं
25. वन्दे संगातिगं सेट्ठं
26. वन्दे तिण्णसागरं
27. वन्दे विसारदं खेमं
28. वन्दे वेदगुं मुनिं
29. वन्दे समणपुण्डरिकं
30. वन्दे केवलिं मुनिं
31. वन्दे अभिनीलनेत्तं
32. वन्दे लोकपूजितं
33. वन्दे अप्पटिमं अतुलं
34. वन्दे अप्पटिपुग्गलं
35. वन्दे अनासवं बुद्धं
36. वन्दे सत्तमंइसिं
37. वन्दे गोतमं बुद्धं
38. वन्दे धम्मपवत्तकं
39. वन्दे सब्बञ्ञुतं ञानं
40. वन्दे लोकविनायकं
41. वन्दे अनावरण दस्सिं
42. वन्दे समन्तभद्दकं
43. वन्दे अच्छरियञानं
44. वन्दे गुणाकरं मुनिं
45. वन्दे मग्गविदुं बुद्धं
46. वन्दे मग्गकोविदं

47. वन्दे निब्बाणमक्खातं
48. वन्दे सुगतमुत्तमं
49. वन्दे महापुरिसवीरं
50. वन्दे अकुतोभयं मुनिं
51. वन्दे अभिविजयलोकं
52. वन्दे गोतम महा मुनिं
53. वन्दे अनुत्तरं सीहं
54. वन्दे सच्चनामकं
55. वन्दे निपुणत्थदस्सिं
56. वन्दे तथागतं मुनिं
57. वन्दे तिलोकसरणं
58. वन्दे सुरियतमोनुदं
59. वन्दे विमुत्तिसम्पन्नं
60. वन्दे अभयदायकं
61. वन्दे तिभुवनविजितं
62. वन्दे परमसुन्दरं
63. वन्दे महापुरिसवरं
64. वन्दे लोकपूजितं
65. वन्दे निब्बाणदस्सावि
66. वन्दे निब्बाणदायकं
67. वन्दे निब्बाणमचलं
68. वन्दे निब्बाणमहामुनिं
69. वन्दे तारपतिं बुद्धं
70. वन्दे आदिच्चबन्धुनं

71. वन्दे सक्यविभूषनं
72. वन्दे परमपूजितं
73. वन्दे तण्हख्यं वीरं
74. वन्दे मोहपदालितं
75. वन्दे लोकेकनेत्तं
76. वन्दे सुगत महामुनिं
77. वन्दे पारगतं वेदं
78. वन्दे एक चक्खुमं
79. वन्दे सीतलहदयं
80. वन्दे ब्रह्मसारथिं
81. वन्दे समाधिसम्पन्नं
82. वन्दे कल्याणमुत्तमं
83. वन्दे पञ्ञाबलप्पत्तं
84. वन्दे झान निस्सयं
85. वन्दे दसबलं वीरं
86. वन्दे विसारदं वरं
87. वन्दे वन्तकसावन्तं
88. वन्दे सद्धम्मदायकं
89. वन्दे सुगतं महापञ्ञं
90. वन्दे अंगीरसं मुनिं
91. वन्दे आरद्धविरियं
92. वन्दे गोतम सत्थारं
93. वन्दे असमसमं बुद्धं
94. वन्दे दिपदानमुत्तमं

95. वन्दे तिभुवनालोकं
96. वन्दे असममहामुनिं
97. वन्दे अतितुलं ब्रह्मं
98. वन्दे कण्हप्पमद्दनं
99. वन्दे परिपुण्ण कायं
100. वन्दे चारुदस्सनं
101. वन्दे महाधम्मराजं
102. वन्दे रुचिरदस्सनं
103. वन्दे सदुल्लभं बुद्धं
104. वन्दे माराभिभुं मुनिं
105. वन्दे बुद्धं भगवन्तं
106. वन्दे सुगतं भगवन्तं
107. वन्दे अरहं भगवन्तं
108. वन्दे वन्दे भगवन्तं

साधु ! साधु !! साधु !!!